mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-04 अंक-261 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
20 सितंबर 2024 शुक्रवार

दैनिक मीडिया ऑडिटर

# दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

ऋषभ पंत के ...
@ पेज 7

## युद्ध की नई तकनीक से हिली दुनिया, अब एआई वॉर की तैयारी

● मिसाइल, तोप और लड़ाकू विमान सब भूल जाइए, आई नई तकनीक ● लेबनान में इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के इस्तेमाल से डर गई है सारी दुनिया

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** न कोई सैनिक, न ही कोई मिसाइल और न ही किसी बाहरी चीज से हमला... कुछ ऐसा ही हुआ है लेबनान में हिजबुल्लाह के लड़ाकों के साथ। लेबनान में पेजर में हुए धमाकों के एक दिन बाद बुधवार को भी देश के कई हिस्सों में इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में विस्फोट की घटनाएं हुई जिनमें 14 लोगों की मौत हो गई और करीब 450 अन्य घायल हो गए। कभी पेजर तो कभी वॉकी-टॉकी में विस्फोट। ये इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स किसी और के नहीं थे जिसके थे उसी पर हमला। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के दौर में इजरायल ने एक पुरानी तकनीक से ही

हिजबुल्लाह को हैरान और परेशान कर दिया। एआई के इस दौर में सब कुछ संभव है। यह इस ओर भी इशारा करते हैं कि एआई वॉर का नजारा कैसा हो सकता है जब इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स लोगों की जिंदगी का अहम हिस्सा बन चुके हैं।

### एआई के इस्तेमाल से बढ़ जाएगी शक्ति

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस मशीनों को इंसानों की तरह सोचने और सीखने की क्षमता प्रदान करती है। एआई का उपयोग अब युद्ध में कई तरह से किया जा रहा है, जैसे कि ड्रोन, साइबर युद्ध, लॉजिस्टिक्स और युद्ध सिमुलेशन। ये हथियार बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के अपने टारगेट को पहचान उन पर हमला कर सकते हैं। एआई से लैस ड्रोन अब युद्ध के मैदान में निगरानी, हमला और तलाशी करेंगे।

### हर फील्ड में बढ़ता जा रहा है दखल

लेबनान में हुए हमलों का आरोप इजरायल पर है। ये अटैक उस ओर इशारा करते हैं कि एआई के दौर में यह और कितना खतरनाक हो सकता है। ऐसे अटैक हो सकते हैं जिनकी कल्पना भी जल्द नहीं की जा सकती। इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स को छूने से भी इस वक्त लेबनान में लोग डर रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का दखल हर फील्ड में बढ़ता जा रहा है। जरूरी नहीं कि किसी देश पर हमला करने के लिए मिसाइल या तोप का इस्तेमाल हो। मानव इतिहास में युद्ध का एक अंधकारमय अध्याय रहा है। सदियों से मनुष्य शक्तिशाली हथियार बनाने में लगा है।

## हम बातचीत से संतुष्ट नहीं जारी रखेंगे हड़ताल

**कोलकाता रेप-मर्डर केस में डॉक्टरों का हड़ताल खत्म करने से इनकार**

**कोलकाता (एजेंसी)।** कोलकाता में ट्रेनी डॉक्टर के रेप-मर्डर केस को लेकर प्रदर्शन कर रहे जूनियर डॉक्टरों और बंगाल सरकार के बीच बुधवार को दूसरे दौर की बातचीत हुई।

डॉक्टरों ने अपनी मांगों को लेकर बंगाल के चीफ सेक्रेटरी मनोज पंत के साथ ढाई घंटे बैठक की, लेकिन इसका कोई नतीजा नहीं निकला। डॉक्टरों ने कहा कि वे सरकार से हुई बातचीत से असंतुष्ट हैं और अपनी हड़ताल जारी रखेंगे। डॉक्टरों ने यह आरोप लगाया कि बैठक में डॉक्टरों राज्य सरकार ने बैठक की लिखित कार्यवाही (मिनट्स ऑफ मीटिंग) मांगे थे, जिसे देने से सरकार ने इनकार कर दिया। इस बीच सीबीआई ने गुरुवार को कलकत्ता मेडिकल कॉलेज के सुपरिनटेंडेंट अंजन अधिकारी से पूछताछ की।

**संक्षिप्त समाचार**

## रामपुर में नैनी दून एक्सप्रेस को बेपटरी करने की साजिश

● रेलवे ट्रैक पर रखा 7 मीटर लंबा खंभा, लोको पायलट ने इमरजेंसी ब्रेक लगाए

**रामपुर (एजेंसी)।** उत्तर प्रदेश के रामपुर में पटरी पर लोहे का खंभा रखकर नैनी दून एक्सप्रेस (12091) को पलटाने की साजिश हुई लेकिन लोको पायलट ने इमरजेंसी ब्रेक लगाकर ट्रेन रोक दी। यह ट्रेन उत्तराखंड के काठगोदाम से देहरादून के बीच चलती है। घटना बुधवार रात करीब 11 बजे की है। सूचना मिलने पर रेलवे और पुलिस प्रशासन ने मौके पर पहुंचकर खंभे को ट्रैक से हटवाया। इस दौरान ट्रेन करीब 20 मिनट तक खड़ी रही। रामपुर डीएम विद्या

सागर मिश्र ने बताया कि खंभे को कब्जे में लिया गया है। रात से ही पड़ताल शुरू कर दी गई है। एसटीएफ तीन संदिग्धों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। आसपास के लोगों ने बताया कि रेलवे लाइन पर करीब की बस्ती के कुछ युवक नशा करते हैं। आस-पास के इलाकों में आए दिन चोरियां भी होती हैं। शक है कि इनमें शामिल लोगों की ही यह हरकत है। रेलवे के इज्जतनगर मंडल (बरेली) के एसपी राजेंद्र सिंह ने बताया- नैनी-दून एक्सप्रेस (12091) काठगोदाम से देहरादून के बीच चलती है। बुधवार रात ट्रेन देहरादून से काठगोदाम की तरफ आ रही थी।

## 'हर अग्निवीर को नौकरी, छात्राओं को मिलेगी स्कूटी

● हरियाणा के संकल्प पत्र में बीजेपी ने किए बड़े वादे

**चंडीगढ़ (एजेंसी)।** हरियाणा विधानसभा चुनाव को लेकर बीजेपी ने अपना घोषणा पत्र जारी कर दिया है। पार्टी ने इसे संकल्प पत्र नाम दिया है। संकल्प पत्र में बीजेपी ने हरियाणा की जनता से 20 वादे किए हैं। जिसमें हर अग्निवीर को परमानेंट जॉब, महिलाओं को 2100 रुपये महीने समेत कई वादे शामिल हैं। रोहतक में घोषणा पत्र जारी करते समय बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा भी मौजूद रहे। इस दौरान राज्य के सीएम नायब

सिंह सैनी ने कहा कि यह घोषणापत्र चुनावी नहीं है। संकल्प पत्र जारी करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कांग्रेस के घोषणापत्र को छलावा बताया। जेपी नड्डा ने कहा कि हम तो हरियाणा की सेवा नॉन स्टॉप कर रहे हैं और इसे नॉन स्टॉप करने में आपको बहुत बड़ी जिम्मेदारी निभानी है। हमने जो कहा था वो किया है, जो नहीं कहा था वो भी किया है और जो कहेंगे वो भी करेंगे। नड्डा ने कहा कि हम लोगों ने तय किया है कि सभी महिलाओं को 'लाडो लक्ष्मी योजना' के तहत प्रतिमाह 2,100 वित्तिय सहायता प्रदान की जाएगी।

## इसरो की धमाकेदार तैयारियों को सरकार की मंजूरी

**चांद से मिट्टी लाने से लेकर अंतरिक्ष में भारतीयों की छलांग तक के मिशन शामिल**

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** हाल ही में केंद्र सरकार की कैबिनेट ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के चार बड़े अंतरिक्ष अभियानों को मंजूरी दे दी है। ये मिशन कुल मिलाकर 31,772 करोड़ रुपये के हैं और 2040 तक भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का खाका तैयार करते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में हुई कैबिनेट बैठक में चंद्रयान-4, शुक्र ग्रह पर मिशन, गगनयान मिशन का विस्तार, भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन और नए रॉकेट सूर्य की मंजूरी दी गई है। कैबिनेट की ये मंजूरी मोदी सरकार 3.0 के 100 दिन के भीतर ही आई है। इसरो के चेयरमैन डॉ. एस सोमनाथ ने बातचीत में कहा, भारत के महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष रोडमैप को अब पंख मिल गए हैं। उन्होंने कहा कि इन चार अहम मंजूरियों के बाद भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम और तेजी से आगे बढ़ने के लिए तैयार हो गया है।

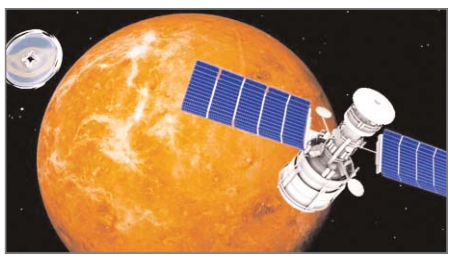

### चांद से नमूने वापस लाएगा चंद्रयान-4

चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग के बाद चंद्रयान-4 मिशन का मुख्य उद्देश्य चांद की सतह से नमूने इकट्ठा कर उन्हें धरती पर वापस लाना है। यह मिशन भारत को भविष्य में चांद पर मानव भेजने और सुरक्षित वापसी के लिए जरूरी तकनीक को विकसित करने में मदद करेगा। इसमें लैंडिंग, डॉकिंग/अनडॉकिंग, और सुरक्षित वापसी जैसी तकनीकें शामिल हैं। इस मिशन के लिए 2,104 करोड़ रुपये का बजट निर्धारित किया गया है और इसे 36 महीनों में पूरा किया जाएगा। भारत अब शुक्र ग्रह पर भी अपने पहले मिशन की तैयारी कर रहा है। शुक्र ग्रह की सतह, वातावरण, और सौर प्रभावों का अध्ययन करने के लिए शुक्र ऑर्बिटर मिशन का विकास किया जाएगा। यह मिशन मार्च 2028 में लॉन्च किया जाएगा और इसके लिए 1,236 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है। शुक्र ग्रह का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह धरती के निकटतम ग्रह है और इसके विकास से यह समझने में मदद मिलेगी कि ग्रहों के वातावरण अलग-अलग तरीके से कैसे विकसित हो सकते हैं।

### भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन और गगनयान की तैयारी

गगनयान मिशन के तहत मानव को अंतरिक्ष में भेजने के प्रोजेक्ट का विस्तार करते हुए भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन बनाने की भी मंजूरी दी गई है। इसके लिए कुल 20,193 करोड़ रुपये का बजट दिया गया है और इसका लक्ष्य दिसंबर 2029 तक पहला यूनिट लॉन्च करना है। इस मिशन के तहत आठ बड़े अभियानों की योजना है, जिसमें अनक्रूड मिशन भी शामिल हैं। यह अंतरिक्ष स्टेशन भारत को दीर्घकालिक अंतरिक्ष अनुसंधान में नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में मदद करेगा।

### रॉकेट सूर्य, अगली पीढ़ी का उन्नत लॉन्च व्हीकल

कैबिनेट ने अगली पीढ़ी के लॉन्च व्हीकल की भी मंजूरी दी है, जिसे अब सूर्य नाम दिया गया है। यह रॉकेट तीन गुना ज्यादा पेलोड क्षमता वाला होगा और इसकी लागत मौजूदा रॉकेट्स से 1.5 गुना अधिक होगी। इस रॉकेट के विकास के लिए 8,239 करोड़ रुपये का बजट दिया गया है और इसे 96 महीनों में पूरा किया जाएगा। सूर्य रॉकेट को फिर से इस्तेमाल किया जा सकेगा, जिससे अंतरिक्ष में कम लागत में पहुंचा जा सकेगा। डॉ. सोमनाथ ने कहा कि इसरो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 2047 तक विकसित भारत के विजन को पूरा करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेगा। अंतरिक्ष तकनीक आज हर भारतीय के जीवन को प्रभावित कर रही है और इन मंजूरियों के साथ भारत अब अंतरिक्ष में नई ऊंचाइयों को छूने के लिए पूरी तरह से तैयार है।

## 21 सितंबर से अमेरिका के दौरे पर रहेंगे पीएम मोदी

● बाइडन से होगी मुलाकात, यूएन महासभा में संबोधन भी

● चौथे क्वाड नेताओं के शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे पीएम

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** प्रधानमंत्री 2 दिन बाद यानी 21 सितंबर से अमेरिका के दौरे पर रहेंगे। यात्रा के दौरान, प्रधानमंत्री विलमिंगटन, डेलावेयर में चौथे क्वाड नेताओं के शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे, जिसकी मेजबानी संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन करेंगे। मोदी के अमेरिकी दौरे पर भारत के विदेश मंत्रालय ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की। भारत के विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने बताया कि यह राष्ट्रपति बाइडन और जापान के प्रधानमंत्री किशिदा के लिए यह एक तरह का विदाई कार्यक्रम जैसा होगा। बता दें कि इस दौरान संयुक्त राष्ट्र महासभा में पीएम मोदी की स्पीच होगी। विदेश मंत्रालय ने बताया कि प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति जो बाइडन के बीच एक सार्थक जुड़ाव का अवसर होगा जहां उन्हें भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी की समीक्षा करने का अवसर मिलेगा। इस वर्ष क्वाड शिखर सम्मेलन की मेजबानी करने के अमेरिकी पक्ष के अनुरोध के बाद, भारत ने 2025 में अगला क्वाड शिखर सम्मेलन की मेजबानी करने पर सहमति दी है। भारतीय विदेश सचिव दीपक मिसरी ने इस बात की पुष्टि नहीं की कि पीएम ट्रंप से मुलाकात करेंगे।

## कांग्रेस-नेशनल कान्फ्रेंस के घोषणापत्र से पाकिस्तान खुश

● ये फिर आतंक फैलाना चाहते हैं, लेकिन कोई भी ताकत 370 वापस नहीं ला सकती ● पीएम मोदी का घाटी की जनता से वादा, जम्मू-कश्मीर को फिर राज्य का दर्जा दिलाएंगे ● कहा-फर्स्ट फेज की वोटिंग में इतिहास रचा, 25 सितंबर को सारे रिकॉर्ड टूटने चाहिए

**श्रीनगर (एजेंसी)।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को जम्मू कश्मीर में दो जनसभाएं कीं। उन्होंने कटरा में कहा कि कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस को लेकर पाकिस्तान में बहुत उत्साह है। वहां इन दोनों पार्टियों की बल्ले-बल्ले हो रही है। इनके घोषणापत्र से पड़ोसी देश बहुत खुश है। पीएम ने कहा कि ये सब मिलकर जम्मू-कश्मीर में आतंक फैलाना चाहते हैं, लेकिन कोई भी ताकत 370 वापस नहीं ला सकती। वहीं, शेर-ए-कश्मीर स्टेडियम में पीएम ने कहा, हमने देश की संसद में कहा है कि जम्मू-कश्मीर को दोबारा राज्य का दर्जा दिलाएंगे। भाजपा ही इसे पूरा करेगी।

इसलिए मेरी आपसे अपील है कि 25 सितंबर को वोटिंग के सारे रिकॉर्ड टूटने चाहिए। इसके पहले 14 सितंबर को पीएम मोदी ने नेशनल कॉन्फ्रेंस, पीडीपी और कांग्रेस को

लेकर कहा, इन तीन खानदानों ने अपनी सियासी दुकान चलाने के लिए दशकों तक घाटी में नफरत का सामान बेचा है। इनके कारण ही यहां के युवा तरक्की नहीं कर पाए। पिछले 6 दिन में पीएम मोदी का यह दूसरा कश्मीर दौरा है। इससे पहले वे 14 सितंबर को डोडा पहुंचे थे। चुनाव में पहले फेज में इतनी बड़ी तादाद में वोटिंग हुई। ये खुशी की बात है कि दहशतगर्दी खत्म हुई और चुनाव के लिए लोग इतनी बड़ी तादाद में घर से बाहर निकले। ये नया इतिहास बना है। आपने ये इतिहास रचा है। दुनिया देख रही है कि कैसे जम्मू-कश्मीर के लोग भारत के लोकतंत्र को मजबूत कर रहे हैं। दिल्ली से लेकर जम्मू-कश्मीर तक ये लोग बौखलाए हुए हैं। इन्हें लगता है, जैसे-तैसे कुर्सी पर कब्जा जमाना और फिर आपको लूटना, ये इनका पैदायशी हक है। जम्मू-कश्मीर की आवाम को उनके जायज हक से महरूम रखना ही इनका सियासी एजेंडा रहा है। इन्होंने सिर्फ डर और अराजकता ही दी है। अब कोई इनके शिकंजे में रहने वाला नहीं है। जिन नौजवानों को आगे नहीं बढ़ने दिया। वे इनके खिलाफ मैदान में उतर आए हैं युवा। आज वादी का जो नौजवान 20-25 साल का है, उनमें से कई पढ़ाई-लिखाई से मेहरूम रह गए हैं।

## देश विरोधी ताकतों के साथ खड़े रहे हैं राहुल

अमित शाह ने कांग्रेस पर पाकिस्तान की भाषा बोलने का लगाया आरोप

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** अमेरिका दौरे पर राहुल गांधी की इल्हान उमर जैसी कट्टर भारत-विरोधी लोगों से मुलाकात और उनके दिए बयानों पर बीजेपी पहले से हमलावर है। इस बीच पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ के एक बयान ने बीजेपी को राहुल गांधी पर हमले का एक और मौका दे दिया है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने आरोप

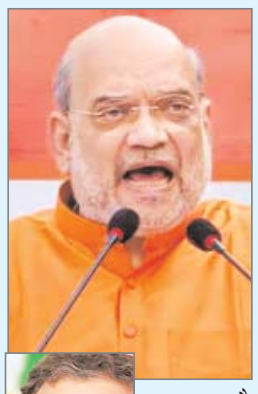

लगाया है कि राहुल गांधी भारत विरोधी ताकतों के साथ खड़े रहे हैं। पाकिस्तानी रक्षा मंत्री के बयान ने एक बार फिर कांग्रेस का पर्दाफाश कर दिया है।

शाह ने एक्स पर पोस्ट किया, पाकिस्तान के रक्षा मंत्री का आर्टिकल 370 और 35ए पर कांग्रेस और एनसी के समर्थन की बात ने एक बार फिर कांग्रेस को एक्सपोज कर दिया है। इस बयान ने पुनः यह स्पष्ट कर दिया है कि कांग्रेस और पाकिस्तान के इरादे भी एक हैं और एजेंडा भी। पिछले कुछ वर्षों से राहुल गांधी देशवासियों की भावनाओं को आहत करते हुए हर एक भारत विरोधी ताकतों के साथ खड़े रहे हैं।

## इजरायल पीएम नेतन्याहू की हत्या की साजिश नाकाम

**शिन बेट का दावा-तीन शीर्ष इजरायली नेताओं को मारना चाहता था ईरान**

**तेल अवीव (एजेंसी)।** इजरायल ने दावा किया है कि उसने ईरान की बड़ी साजिश को विफल किया है। इजरायल की आतंरिक सुरक्षा के लिए जिम्मेदार एजेंसी शिन बेट ने कहा है कि उसने प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू, रक्षा मंत्री योव गैलेंट और शिन बेट डायरेक्टर रोनेन बार की हत्या की ईरान की साजिश को नाकाम किया है। शिन बेट ने गुरुवार को ये दावा किया है। इस साजिश में ईरान एक इजरायली व्यवसायी का इस्तेमाल कर रहा था, जिसने तुर्की में काफी समय बिताया था। वह इजरायल में हत्या की योजना बनाने के लिए तुर्की और ईरानी दोनों व्यक्तियों के साथ बैठकें और लेनदेन कर रहा था। यरुशलम पोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, इस प्लान को पूरा करने के लिए इस वर्ष अप्रैल में तुर्की के नागरिक आंद्रेई फारुक

असलान और गुनीद असलान ने इजरायली व्यवसायी से संपर्क किया और उसे ईजदी नाम के एक अमीर ईरानी के दो प्रतिनिधियों से मिलने के लिए तुर्की के शहर समंदाग में बुलाया। ये बैठक मई के महीने में हुई थी। वह इस बात पर सहमत हो गया कि तुर्की से कार के जरिए ईरान में जाएगा, जहां उसकी मुलाकात ईदी और हज नाम के ईरानी सुरक्षा प्रतिष्ठान के सदस्य से हुई। रिपोर्ट के मुताबिक, इजराइयली व्यवसायी ने किसी भी गतिविधि को शुरू करने से पहले शुरू में दस लाख डॉलर मांगे थे। इजरायली व्यवसायी ने इसके बाद अगस्त में दूसरी बार ईरान का दौरा किया और साजिश को पूरा करने के लिए अपने वित्तीय, रसद और हथियार-संबंधी कार्यों की शुरुआत के हिस्से के रूप में 5,000 यूरो प्राप्त किए।

**नवादा कांड में आरोपियों के नाम की हुई पहचान**

## आरोपी नंदू पासवान समेत 15 आरोपी हुए गिरफ्तार

**गिरफ्तार आरोपियों में एक रिटायर हवलदार भी शामिल**

**नवादा (एजेंसी)।** बिहार के नवादा जिले में भूमि विवाद को लेकर कई मकानों को आग लगाने से संबंधित मामले में पुलिस ने अब तक 15 लोगों को गिरफ्तार किया है। नवादा के जिलाधिकारी (डीएम) आशुतोष कुमार वर्मा ने मुफस्सिल थाना अंतर्गत मांझी टोला में बुधवार शाम को हुई इस घटना के बारे में कहा, जिला पुलिस ने घटना के सिलसिले में अब तक 15 लोगों को गिरफ्तार किया है और अन्य लोगों की तलाश जारी है। मामले की जांच के लिए पुलिस ने एक विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया है। डीएम ने कहा कि प्रारंभिक जांच में पता चलता है कि मांझी टोला में कल रात लोगों के एक समूह ने कुल 21 मकानों में को कथित तौर पर आग लगा दी। डीएम आशुतोष कुमार वर्मा ने कहा कि वरिष्ठ प्रशासनिक और पुलिस अधिकारी घटनास्थल पर मौजूद हैं और वे जल्द ही एक रिपोर्ट प्रस्तुत करके यह बताएंगे कि कितने मकान क्षतिग्रस्त हुए या जल गए और सभी आरोपियों को जल्द ही पकड़ लिया जाएगा। वर्मा ने कहा कि वे मांझी टोला में पीड़ितों को भोजन सामग्री और पीने के पानी समेत सभी राहत सामग्री प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पीड़ितों के लिए अस्थायी टेंट लगाए गए हैं और उन्हें वहां स्थानांतरित किया जा रहा है।

## मीटर रीडिंग करने वाले ही घर पर कराएंगे केवाईसी

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** अब बिजली कंपनी द्वारा घर पर ही केवाईसी कराई जाएगी। इसके लिए मीटर रीडिंग करने वाला रीडिंग के दौरान केवाईसी करेगा। यह प्रक्रिया उपभोक्ता के घर में मीटर रीडर द्वारा निष्ठा एप के माध्यम से की जाएगी। साथ ही उपभोक्ताओं की सहूलियत के लिए यह सुविधा उपाय एप पर भी उपलब्ध कराया जाएगा। उपभोक्ता उपाय एप का उपयोग करके केवाईसी प्रक्रिया करें। इसके लिए उपभोक्ता की समग्र आईडी सत्यापन के लिए ओटीपी पंजीकृत मोबाइल नंबर पर आएगा। उपभोक्ता का मोबाइल नंबर समग्र पोर्टल पर पंजीकृत होना जरूरी है। कई बार ओटीपी प्राप्त करने में देरी भी हो सकती है, या फिर एरर भी आ सकता है। वीक इंटरनेट कनेक्शन इसकी मुख्य वजह हो सकती है। इसलिए उपभोक्ता यह सुनिश्चित करें कि केवाईसी प्रक्रिया करते समय आपके डिवाइस में सही और स्थिर इंटरनेट कनेक्टिविटी होना जरूरी है।

## सेमी गवरमेन्ट एम्प्लाइज फेडरेशन ने की एरियर की मांग

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** नागरिक आपूर्ति निगम के कर्मचारी 7वें वेतनमान के 27 माह के एरियर की मांग कर रहे हैं। सेमी गवरमेन्ट एम्प्लाइज फेडरेशन का कहना है कि सरकार और निगम कर्मचारियों की मांग पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। फेडरेशन के अध्यक्ष अनिल बाजपेई कहते हैं कि मांग पर अब ध्यान नहीं दिया तो आंदोलन होगा। कर्मचारियों को 27 माह बाद 7वां वेतनमान दिया गया है। वे इस अवधि का एरियर मांग रहे हैं। इसके अलावा कर्मचारी क्रमोन्नति नहीं देने का भी विरोध कर रहे हैं। फेडरेशन ने मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव खाद्य एवं वित्त, आपूर्ति निगम के प्रबंध संचालक से मांग पूरी करने का अनुरोध किया है। साथ ही मांग पूरी न करने पर मुख्यालय के सामने धरना-प्रदर्शन, अनिश्चितकाल के लिए आंदोलन करने की चेतावनी दी है। मांग का समर्थन करने और चेतावनी देने वालों में मेघराज यादव, गजेंद्र कोठरी, संतोष मिश्रा, हेमराज मोरे, अनिल जैन, जय सिंह, गिरीश यादव, पीसी जैन, पीएल शर्मा, आरएस रघुवंशी, एके ब्योहार, पीएस जाट सहित अन्य कर्मचारी शामिल हैं।

## राष्ट्रीय वेयर हाउसिंग कार्पोरेशन कर्मचारी फेडरेशन का अधिवेशन भुवनेश्वर में

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** राष्ट्रीय वेयर हाउसिंग कार्पोरेशन कर्मचारी फेडरेशन का राष्ट्रीय अधिवेशन 9 जनवरी 2025 को भुवनेश्वर ओडिशा में आयोजित किया जा रहा है। फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल बाजपेई की अध्यक्षता में आयोजित होने वाले इस सम्मेलन में देशभर से फेडरेशन के पदाधिकारी शामिल होंगे। अधिवेशन में राष्ट्रीय स्तर पर कर्मचारियों की मांगों को पूरा कराने और समस्याओं के निराकरण पर विचार किया जाएगा।

# विदाई बेला में गजानन का इंद्र ने किया अभिषेक, भोपाल के घाटों पर रातभर चला विसर्जन का सिलसिला

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** गणपति बप्पा मोरिया... अलगे बरस तू जल्दी आ की कामना के साथ श्रद्धालुओं ने मंगलवार को मंगलमूर्ति भगवान श्री गणेश को विदाई दी। इसके साथ ही 10 दिनी गणेशोत्सव का समापन हुआ। शाम को इंद्रदेव ने भी मानो झमाझम वर्षा के साथ भगवान का अभिषेक किया। इस दौरान भी श्रद्धालुओं ने रंग-गुलाल उड़ाकर नाचते-गाते हुए पूजन-अर्चन के साथ मूर्ति विसर्जन किया। शहर में सुबह से ही मूर्तियों के विसर्जन का सिलसिला शुरू हो गया था, जो रातभर जारी रहा। रात 11 बजे तक शहर के सभी सात घाटों पर कुल 21,037 प्रतिमाओं का विसर्जन हो चुका था। विसर्जन घाटों पर 19961 छोटी और 1076 बड़ी प्रतिमाओं को क्रेन के जरिए विसर्जित किया गया। जोन स्तर पर शहर के 22 स्थानों पर भगवान

श्रीगणेश की मूर्तियां प्राप्त करने और उन्हें विसर्जित करने की व्यवस्था भी की गई। यह काम दो दर्जन वाहनों के जरिए किया गया। यहां निगम कर्मचारियों को लगाया गया था। राजधानी में परंपरागत चल समारोह निकाला गया। बुधवारन को भी भगवान गणेश की प्रतिमाओं को अलग-अलग विसर्जन घाटों पर विसर्जित किया जा रहा है। नगर निगम द्वारा घाटों पर गणेश प्रतिमाओं के विसर्जन के लिए एक दर्जन से अधिक बड़ी क्रेन के साथ लाइफ जैकेट, लाइफ बाय, ट्यूब, रस्सी बंडल की व्यवस्था की गई है। घाट में विसर्जन के दौरान इसकी लाइव मानीटरिंग कराई जा रही है। इसके लिए सीसीटीवी कैमरे भी लगाए गए हैं। घाटों पर हादसा न हो, इसलिए पानी में उतरने पर पूरी तरह से रोक है। क्रेन की मदद से बड़ी मूर्तियों का विसर्जन किया जा रहा है।

## मध्य प्रदेश में नगर निगम अध्यक्षों को भी कार्यकाल पूरा होने से पहले हटाना अब नहीं होगा आसान

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** मध्य प्रदेश में नगर निगम के अध्यक्षों को कार्यकाल पूरा होने से पहले हटाना अब आसान नहीं होगा। पहले तो तीन वर्ष की अवधि पूरी होने से पहले अविश्वास प्रस्ताव लाया ही नहीं जा सकेगा। प्रस्ताव तभी मान्य होगा, जब उस पर तीन चौथाई पार्षदों के हस्ताक्षर होंगे। इस व्यवस्था को लागू करने के लिए सरकार एक बार फिर अध्यादेश का सहारा लेने की तैयारी में है। इसके माध्यम से नगर पालिका निगम अधिनियम 1956 की धारा 23 में संशोधन किया जाएगा।

नगरीय विकास एवं आवास विभाग के अधिकारियों का कहना है कि नगर निगम के अध्यक्षों का चुनाव भी नगर पालिका और नगर परिषद के अध्यक्षों की तरह पार्षदों के माध्यम से चुनाव होता है। नगर पालिका और परिषद के अध्यक्षों को पद से हटाने के लिए निर्धारित अवधि बढ़ाने के साथ पार्षदों के समर्थन की संख्या भी बढ़ा दी गई है। कई माध्यमों से नगर निगम अध्यक्षों के विरुद्ध आने वाले अविश्वास प्रस्ताव की अवधि में वृद्धि की मांग आई है। इसे लेकर विभाग ने नगर पालिका अधिनियम में संशोधन का प्रारूप तैयार किया है। इसमें तीन वर्ष का कार्यकाल पूरा होने से पहले अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत ही नहीं किया जा सकेगा। प्रस्ताव भी तभी मान्य होगा, जब उस पर तीन चौथाई पार्षदों के हस्ताक्षर नहीं होंगे। अभी दो वर्ष की कार्यावधि पूर्ण होने और दो तिहाई पार्षदों के समर्थन से प्रस्ताव प्रस्तुत किया जा सकता है। विभाग द्वारा तैयार प्रारूप को अब वरिष्ठ सचिव समिति की स्वीकृति के बाद कैबिनेट में अंतिम निर्णय के लिए प्रस्तुत किया जाएगा।

## विक्रांत भूरिया को युवा कांग्रेस का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने का फर्जी पत्र हुआ वायरल

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** कांग्रेस के झाबुआ विधानसभा से विधायक डा.विक्रांत भूरिया को युवा कांग्रेस का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए जाने को फर्जी पत्र मंगलवार को इंटरनेट मीडिया में बहुप्रसारित हुआ। कांग्रेस ने अभी ऐसी कोई नियुक्ति नहीं की है। संगठन के प्रदेश प्रभारी शेष नारायण ओझा ने बताया कि नियुक्ति के संबंध में हमें कोई जानकारी नहीं है। वहीं, प्रदेश कांग्रेस के प्रवक्ता विवेके त्रिपाठी ने पत्र को फर्जी बताया। श्रीनिवास बीवी जुलाई 2019 में संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त हुए थे। तीन वर्षीय कार्यकाल पूरा हो चुका है और नई नियुक्ति न होने के कारण वे अभी भी अध्यक्ष पद का कार्यभार संभाल रहे हैं। पिछले दिनों भोपाल में आयोजित न्याय यात्रा में वे शामिल हुए थे। उनके स्थान पर नया अध्यक्ष बनाए जाने की चर्चाएं काफी दिनों से चल रही हैं। इसके लिए मध्य प्रदेश युवा कांग्रेस

के पूर्व अध्यक्ष और विधायक डा.विक्रांत भूरिया का नाम चर्चा में भी है। आदिवासी वर्ग से आने वाले डा.भूरिया पूर्व केंद्रीय मंत्री कांतिलाल भूरिया के बेटे हैं। लोकसभा चुनाव के समय पिता के रतलाम लोकसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ने के कारण त्यागपत्र दे दिया था। उन्हें कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव केसी वेणुगोपाल के हस्ताक्षर से राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त करने का आदेश जारी हुआ।

## रजा माधव,कुसुम सक्सेना और सुधा समेत 13 विभूतियां सम्मानित होंगी

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** मप्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा दिए जाने वाले 13 पुरस्कारों की घोषणा कर दी गई है। समिति द्वारा साहित्य,शिक्षा तथा समाजसेवा से जुड़ी विभूतियों को सम्मानित किया जाता है। इसके लिए समिति द्वारा पिछले दिनों अनुशंसाएं आमंत्रित की गईं थीं। प्राप्त अनुशंसाओं पर विचार के बाद चयन समिति द्वारा नामों की घोषणा की गई है। समिति के मंत्री संचालक कैलाशचंद्र पंत ने बताया कि घोषित पुरस्कारों के तहत स्व. महिमा मेहता सम्मान से वाराणसी की साहित्यकार डा. नीरजा माधव सम्मानित होंगी। सम्मान के तहत 21 हजार रुपये की राशि प्रदान की जाती है। विशिष्ट हिंदी सेवी सम्मान से गोवर्धन यादव छिंदवाड़ा, संपत्तिदेवी विजयवर्गीय स्मृति महिला कल्याण पुरस्कार डा. कुसुम सक्सेना भोपाल, स्व. इंदिरा मल्होत्रा स्मृति मेधावी विद्यार्थी सम्मान बीए फाइनल में भोपाल जिले में प्रथम स्थान प्राप्त तनु गुलाटी, रामेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव नवीन पुरस्कार भानुप्रताप सिंह भदौरिया, अंबिकाप्रसाद वर्मा दिव्य पुरस्कार डा. अखिलेश पालरिया, प्रकाश बालकृष्ण ओबेराय महिला सम्मान कुलतार कौर कक्कर, सुंदरबाई शंकरलाल तिवारी समाजसेवी सम्मान सुधा दुबे, रामायण-गार्गी मेधावी छात्र पुरस्कार आदित्य गौर तथा रामचंद्र श्रीवल्लभ चौधरी मेधावी छात्र पुरस्कार सार्थक साहू को प्रदान किया जाएगा।

## इस माह रिटायर हो जाएंगे दो एडीजी

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** पुलिस मुख्यालय के आठ एडीजी जनवरी 2025 से जनवरी 2027 के बीच सेवानिवृत होने जा रहे हैं, पर उनकी जगह इन तीन वर्षों में प्रतिवर्ष एक अधिकारी ही एडीजी बन पाएगा। इसकी वजह यह कि रिक्त होने वाले पदों को भरने के लिए उतने डीआइजी ही नहीं रहेंगे। इससे कामकाज पर असर पड़ सकता है क्योंकि एक एडीजी के पास दो से तीन शाखाओं का प्रभार रहेगा।

अभी भी कुछ शाखाओं में ऐसी स्थिति है। एडीजी कल्याण अनिल कुमार के पास वित्त और राज्य औद्योगिक सुरक्षा बल (एसआएसएफ) का भी प्रभार है। एडीजी पीटीआरआइ अनिल गुप्ता को रिसर्च एवं डेवलपमेंट का भी प्रभार दिया गया है। एडीजी (अजाक) राजेश गुप्ता और एडीजी (पीटीआरआइ) अनिल कुमार गुप्ता 30 सितंबर को सेवानिवृत हो रहे हैं। नियमानुसार उनके स्थान पर डीआइजी की पदोन्नति जनवरी 2024

में होगी। दो पद के विरुद्ध सिर्फ उज्जैन डीआइजी संतोष सिंह (2000 बैच) ही पदोन्नत हो पाएंगे। कारण, इस बैच में वह अकेले अधिकारी हैं। ऐसी स्थिति लगातार तीन वर्ष रहेगी। जनवरी 2026 में सीधी भर्ती के 2001 बैच प्रमोद कुमार वर्मा और 2027 में 2002 बैच के अभय सिंह एडीजी बनेंगे। इस बीच योगेश मुद्गल, पवन श्रीवास्तव, मनीष शंकर शर्मा, डीसी सागर, सोनाली मिश्रा, संजीव कुमार शमी, आशुतोष राय और ए साई मनोहर में से कुछ स्पेशल डीजी तो अधिकतर एडीजी पद से ही रिटायर हो जाएंगे। एडीजी कम होने की स्थिति में आगे चलकर ऐसी स्थिति भी बनेगी कि स्पेशल डीजी के 12 पदों में से भी कुछ रिक्त रह जाएंगे।

## मध्य प्रदेश के इंजीनियरिंग कॉलेजों में ईडब्ल्यूएस की आधी से ज्यादा सीटें खाली

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** प्रदेश के 139 इंजीनियरिंग कॉलेजों में प्रवेश के लिए कालेज लेवल काउंसलिंग (सीएलसी) प्रक्रिया जारी है। इसमें 72 हजार सीटों में से अभी तक 40 हजार विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है। करीब 32 हजार सीटें अभी खाली हैं। अब कालेज लेवल काउंसलिंग (सीएलसी) से सीटें भरने की संभावना है। इसमें सबसे अधिक कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग (सीएसई) ब्रांच को विद्यार्थी पसंद कर रहे हैं। इसमें आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) की साढ़े छह हजार में से ढाई हजार सीटें भरी हैं। अभी भी साढ़े तीन हजार सीटें रिक्त रह गई हैं, जो रिक्त ही रहेंगी, क्योंकि उक्त सीटें सिर्फ केंद्रीय काउंसलिंग से भरी जाती हैं। वहीं ट्यूशन फीस वेबर स्कीम (टीएफडब्ल्यू) की 80 फीसद सीटों पर प्रवेश हुए हैं। इसमें 20 फीसद विद्यार्थियों ने छोटे स्तर के कालेज और अपनी पसंद के ब्रांच नहीं मिलने के कारण कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग (सीएसई) में फीस देकर बड़े कालेजों में प्रवेश लिए हैं। वहीं ईडब्ल्यूएस में महज 37 फीसद सीटों पर ही प्रवेश हो सके हैं। इस बार

63 फीसद सीटें रिक्त रहने की संभावना है। प्रदेश के 139 कालेजों में तीन से 12 सीटें टीएफडब्ल्यू में दी गई हैं। दो चरण की केंद्रीय काउंसलिंग और सीएलसी में 1,784 सीटों में से 1,425 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिए हैं। कालेज संचालकों से सीएस, मैकेनिकल और आइटी में सबसे ज्यादा टीएफडब्ल्यू की सीटें ली हैं। उक्त प्रवेश में 60 फीसद विद्यार्थियों ने सीएसई की सीट पर प्रवेश लिए हैं। वहीं सीएसई नहीं मिलने की दशा में विद्यार्थियों ने आईटी में प्रवेश लेकर समझौता किया है, ताकि वे अगले वर्ष तीसरे सेमेस्टर में आकर अपनी ब्रांच को सीएसई में बदल सकें।

## भोपाल रेलवे स्टेशन पर जल्द खुलेगा जन-औषधि केंद्र

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** आम लोगों को गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाएं बेहद सस्ती दरों पर मिल सकें, इसके लिए भोपाल रेल मंडल स्टेशन के बाहर जन-औषधि केंद्र खोलने जा रहा है। रेलवे की ओर से स्टेशनों पर भारतीय जन-औषधि परियोजना के तहत मेडिकल स्टोर खोले जा रहे हैं। इसके तहत भोपाल स्टेशन पर अगले एक-दो महीने में जन-औषधि केंद्र खोला जाएगा। इसके बाद रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को दवा के लिए परेशान नहीं होना पड़ेगा। वहीं, स्टेशन के आसपास रहने वाले लोग भी आसानी से सस्ते दामों पर दवा ले सकेंगे। इसको लेकर भोपाल रेल मंडल की ओर से टेंडर जारी कर दिया है। साथ ही स्थान भी चिह्नित कर लिया गया है। भोपाल स्टेशन परिसर में प्लेटफार्म एक की ओर नई बिल्डिंग के सामने जन-औषधि केंद्र खोला जाएगा। यहां केंद्र में आपात स्थिति में पहुंचने वाले मरीजों के उपचार, दवा का पर्चा बनाने के लिए विशेषज्ञ भी मौजूद रहेंगे। हालांकि इनके ड्यूटी टाइम को लेकर अभी स्थिति स्पष्ट नहीं है। रेलवे की मंशा है कि सफर के दौरान बीमार होने वाले यात्रियों को दवा के लिए परेशान न होना पड़े। उन्हें प्लेटफार्म पर ही दवा मिल जाएं। वहीं, दूसरी ओर जन-औषधि केंद्र के जरिए जेनेरिक दवा को बढ़ावा मिले। इसलिए पहली बार स्टेशन के प्लेटफार्म पर दवा दुकानों को खोला जा रहा है। इन केंद्रों के स्ट्रक्चर बनाने की जिम्मेदारी रेलवे के ही स्टोर विभाग को सौंपी है। विभाग के अधिकारियों को रेलवे बोर्ड से विशेष तौर पर निर्देशित किया है कि भोपाल स्टेशन पर बनने वाले केंद्र को आकर्षक और सुविधाजनक बनाया जाएगा, ताकि स्टेशन की भीड़ के दौरान यात्रियों को आसानी से यह केंद्र दिख जाएं।

## जिन बुजुर्ग माता-पिता को जीते-जी वृद्धाश्रम में छोड़ा, मौत के बाद अब तर्पण के लिए मांग रहे उनकी निशानी

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** जिन लोगों ने जीते-जी माता-पिता को वृद्धाश्रम में छोड़ दिया, उन्हें कई साल बाद माता-पिता की आत्मा की शांति की चिंता सता रही है। ऐसे लोग अपने मृत माता-पिता निशानियां लेने वृद्धाश्रम के चक्कर लगा रहे हैं। भोपाल के 71 वर्षीय सतीश शर्मा को परिजनों ने श्रीहरि वृद्धाश्रम में छोड़ दिया था। उपेक्षा के कारण उन्होंने श्रीहरि वृद्धाश्रम के संचालक वेद प्रकाश शर्मा को वसीयत कर दी कि उनका देहदान कर दी जाए। 3 साल पहले ही सतीश की मौत हो गई। परिजन अंतिम संस्कार? करने भी नहीं आए। अब उनके बच्चे पिता की कोई वस्तु लेने के लिए चक्कर लगा रहे हैं। बच्चों का कहना है कि पंडित ने पितृ दोष बताया है। तर्पण नहीं करेंगे तो परेशानी खत्म नहीं होगी। पिता को मोक्ष नहीं मिलेगा और वे पितृ ऋण से मुक्त नहीं हो पाएंगे।

कुछ नहीं तो चप्पल ही दे दो = आसरा वृद्धाश्रम की मैनेजर राधा चौबे के अनुसार, कई बार परिजन तो सूचना देने के बाद भी मुखाग्नि देने नहीं पहुंचते। बाद में निशानियां मांगते हैं। एक बुजुर्ग की मौत के सालों बाद उनका बेटा उनकी चप्पल मांगने के लिए पीछे पड़ा है। उसे सपने में पिता बिना चप्पल के दिखते हैं।

पंडित ने वृद्धाश्रम से चप्पल लाकर उसका अंतिम संस्कार व उसके बाद तर्पण करने कहा है। अपना घर वृद्धाश्रम की संचालिका माधुरी मिश्रा बताती हैं कि लोग अपने माता-पिता के अंतिम संस्कार में भी नहीं आते। बीमारी या मौत की सूचना देने के बाद भी आने से कतराते है कि कहीं रुपए खर्च न करना पड़े।

अब एक बुजुर्ग के बच्चे उनकी मौत के तीन साल बाद आकर सामान मांग रहे हैं। कुछ परिजनों ने सामान न देने पर हंगामा कर दिया, जिसके बाद उन्हें पुलिस के हवाले करना पड़ा। अभी भोपाल में श्रीहरि वृद्धाश्रम में 53, अपना घर वृद्धाश्रम में 24, आसरा वृद्धाश्रम में 85, आनंदधाम वृद्धाश्रम में 22, यशोदा वृद्धाश्रम में 18 बुजुर्ग हैं। श्रीहरि वृद्धाश्रम के संचालक वेद प्रकाश शर्मा के अनुसार, माता-पिता की निशानी लेने आने वालों का कहना होता है कि जीते-जी तो कभी डर नहीं लगा, अब डर लगता है कि उनकी आत्मा परेशान न करे। कन्हैयालाल सिंधी और काशीबाई दांगी के बच्चे भी तर्पण के लिए उनका सामान लेने के लिए चक्कर लगा रहे हैं। आनंदधाम वृद्धाश्रम के सचिव आरआर सुरंगे ने बताया कि जीते-जी भले चिंता न करें, लोग मरने के बाद सामान और मृत्यु प्रमाण पत्र ले जाना नहीं भूलते।

# ईको टूरिज्म से प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसधानों का संरक्षण और स्थानीय समुदायों को आर्थिक लाभ दिया जायेगा

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री रामनिवास रावत ने वन भवन में मध्यप्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड की साधारण सभा की 15वीं बैठक में कहा कि ईको टूरिज्म से प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं स्थानीय समुदायों को आर्थिक लाभ के अवसर प्रदान किये जायेंगे। श्री रावत ने कहा कि प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता बढ़ाना हमारा लक्ष्य होगा। स्थायी और जिम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा देने से पर्यावरण और स्थानीय समुदायों के लिये लाभकारी होगा। वन मंत्री श्री रावत ने कहा कि मध्यप्रदेश के राष्ट्रीय उद्यान एवं टाइगर रिजर्व में सिंगल प्लास्टिक को बैन किया जाना सुनिश्चित किया जाये। उन्होंने कहा कि स्व-सहायता समूह के सदस्यों से कपड़े का थैला तैयार कराकर पर्यटकों को सशुल्क उपलब्ध करायें, जिससे पर्यटक पार्क में प्लास्टिक बैग न लायें। पर्यटकों की सुविधा के लिये पार्क प्रबंधन वाटर बॉटल भी सशुल्क उपलब्ध करायें। उन्होंने कहा कि बोर्ड के कार्यकलापों एवं गंतव्य स्थलों का ज्यादा से ज्यादा प्रचार-प्रसार किया जाये, जिससे अभ्यारण्यों में पर्यटकों का रुझान बढ़े। मंत्री श्री रावत ने कहा कि ईको पर्यटन से स्थानीय समुदाय की आजीविका के अवसर विकसित किये जायें। इससे वनों पर उनकी निर्भरता कम होगी और वनों का संरक्षण भी हो सकेगा। मंत्री श्री रावत ने स्थानीय समुदाय के सदस्यों में क्षमता विकास एवं कौशल उन्नयन के लिये गाइड प्रशिक्षण, अतिथि सत्कार, खानसामा और अनुभूति प्रेरक प्रशिक्षण पर जोर दिया। वन मंत्री श्री रावत ने कहा कि जल-प्रपात पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये स्थानीय लोगों को जल आधारित सुरक्षा उपायों, खोज और बचाव, वन नियमों एवं दिशा-निर्देशों, नदी पार करना, जंगल में प्राथमिक चिकित्सा, जंगल ट्रेकिंग की मूल बातों का प्रशिक्षण दिया जाये। साथ ही जल-प्रपात में दुर्घटना, बचाव एवं प्राथमिक चिकित्सा संबंधी प्रशिक्षण भी दिया जाये। वन मंत्री श्री रावत ने मध्यप्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड के वर्ष 2022-23 एवं वर्ष 2023-24 के वार्षिक प्रतिवेदन का अनुमोदन किया। साथ ही मध्यप्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड में प्रबंधक आईटी और प्रबंधक ईको पर्यटन की नियुक्ति करने की अनुमति का अनुमोदन दिया बैठक में वन विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री अशोक वर्णवाल, मुख्य वन संरक्षक श्री असीम श्रीवास्तव, मुख्य कार्यपालन अधिकारी मध्यप्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड एवं अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्य-प्राणी और अधिकारी उपस्थित थे।

# सीईओ जिला पंचायत ने की योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा

## योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन तथा प्रगति से प्रतिदिन अवगत कराने के दिए निर्देश

**मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र।** जिला पंचायत सभागार में जिले के नवागत मुख्य कार्यपालन अधिकारी अंशुमान राज द्वारा पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग की समस्त योजनाओं की समीक्षा की गई। उक्त समीक्षा बैठक में समस्त योजनाओं के जिला प्रभारी, समस्त जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी, सहायक यंत्री (मनरेगा), अति. कार्य. अधिकारी (मनरेगा), ब्लाक समन्वयक प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना, ब्लाक समन्वयक स्वच्छ भारत मिशन एवं उपयंत्री उपस्थित हुए।

समीक्षा बैठक के पूर्व निर्धारित एजेन्डे के अनुसार सर्वप्रथम मनरेगा योजना की समीक्षा की गई। परियोजना अधिकारी (लेखाधिकारी) मनरेगा अशोक कुमार शुक्ला द्वारा मुख्यकार्यपालन अधिकारी को मनरेगा योजना के अंतर्गत जनपदवार वित्तीय वर्ष 2024-25 के लेबर बजट के सापेक्ष प्रगति, लेबर नियोजन तथा एससीध्एसटीध्वूमेन के मानव दिवस सृजन, पूर्व वर्षों विशेष रूप से वित्तीय वर्ष 2022-23 एवं उसके पूर्व के वर्षों के प्रगतिरत कार्यों की पूर्णता तथा समय से भुगतान के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। मुख्यकार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत द्वारा समस्त उपयंत्रियों एवं सहायक यंत्रियों को निर्देशित किया गया कि किसी भी नवीन कार्य की तकनीकी स्वीकृति जारी करने के पहले उसी प्रकृति के पूर्व से प्रगतिरत निर्माण कार्यों के संबंध में निर्धारित प्रपत्र में जानकारी उपलब्ध कराई जावे, साथ ही लेबर नियोजन तथा पूर्व वर्षों के प्रगतिरत कार्यों को पूर्ण कराने के लिए कार्ययोजना तैयार करते हुए कार्यों के पूर्णता प्रमाण पत्र जारी करावें एवं प्रतिदिवस की प्रगति से अवगत कराना सुनिश्चित करें। साथ ही गौशाला तथा अमृत सरोवर के कार्यों को प्राथमिकता से पूर्ण कराने हेतु निर्देशित किया गया।

प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना की समीक्षा के दौरान आवास प्रभारी ब्रम्हानंद पाण्डेय द्वारा मुख्यकार्यपालन अधिकारी को जनपदवार आवास की प्रगति से अवगत कराया गया। मुख्य कार्यपालन अधिकारी द्वारा समस्त ब्लाक समन्वयक को निर्देशित किया गया कि आवास की स्वीकृति एवं एफ्टीओ जारी किये जाने में अंतर न हो। साथ ही पंचायत समन्वय अधिकारियों को नोडल अधिकारी बनाते हुए प्रतिदिवस की प्रगति से अवगत कराने के निर्देश दिये गये। इसके अतिरिक्त निर्देशित किया गया कि शासन की अति महत्वाकांपीएम जनमन आवास योजना के क्रियान्वयन में किसी प्रकार की कोई लापरवाही न की जाये।

स्वच्छ भारत मिशन की समीक्षा के दौरान प्रभारी अधिकारी सुचिता सिंह द्वारा स्वच्छ भारत मिशन के अंर्तगत स्वच्छताकर्मी शिविर के आयोजन, 2 अक्टूबर गांधी जयंती के अवसर पर शासन स्तर से निर्धारित कार्यक्रम के आयोजन, ओडीएफप्लस माडल ग्राम व्यक्तिगत पारिवारिक शौचालय निर्माण तथा सामुदायिक स्वच्छता परिसर निर्माण की जनपदवार प्रगति से अवगत कराया गया। मुख्यकार्यपालन अधिकारी द्वारा निर्धारित लक्ष्य को समयावधि में पूर्ण कराने के निर्देश दिये गये। अंत में मुख्यकार्यपालन अधिकारी द्वारा सभी सहायक यंत्री, ब्लाक समन्वयक आवास एवं एस.बी.एम तथा उपयंत्रियों को ग्रामीण विकास विभाग की समस्त योजनाओं में प्रगति लाने के निर्देश दिये गये।

## राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए विद्यार्थी हुए चयनित

**मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र।** स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कला उत्सव सत्र 2024/25 के अंतर्गत पीएम श्री शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पनवार में जिला स्तरीय प्रतियोगिता संपन्न हुई। जिला स्तरीय प्रतिगोगिता में एकलव्य विद्यालय हड़बडो के कई होनहार छात्र छात्राओं का का चयन अलग अलग विधाओं में प्राची द्विवेदी कक्षा 11, प्रियांशी सिंह कक्षा 11, प्रतीक्षा तिवारी कक्षा 11, रागिनी मिश्रा कक्षा 11 एवं सोनाली सिंह कक्षा 9, समूह नृत्य अर्पिता सिंह कक्षा 11, प्रज्ञांशी सिंह कक्षा 9, पद्मिनी सिंह कक्षा 9, दीपाली तिवारी 11 एवं दिव्या सेन, स्क्रेच अर्पिता पाठक कक्षा 11 एवं मूर्ति कला मीनाक्षी विश्वकर्मा कक्षा 11 में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ एवं सभी छात्रध्छात्राओं का राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयन किया गया है। अब ये सभी बच्चे जिले की ओर से राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में सामिल होकर संपूर्ण सीधी जिले का गौरव बढ़ायेंगे। छात्रों की इस उपलब्धि पर विद्यालय के संचालक ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, नीतू सिंह, संरक्षक शीलध्वज सिंह, प्रबंधक विनोद सिंह, श्यामलाल शर्मा, प्राचार्य स्वेता सिंह, राजेंद्र द्विवेदी, वरिष्ठ शिक्षक मनीता सिंह, प्रीति शुक्ला एवं समस्त विद्यालयीन परिवार एवं अभिभावकों द्वारा छात्र-छात्राओं को शुभकामनायें देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की हैं।

## धोरबंधा गाँव में दो माह से जला है ट्रांसफार्मर, समस्याओं से जूझ रहें ग्रामींण

**मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र।** आदिवासी विकासखंड कुशमी के ग्राम पंचायत केशलार के वनांचल क्षेत्र धोरबंधा गाँव में जायसवाल मोहल्ले में पिछले दो महीनों से ट्रांसफार्मर जला हुआ है। जिसके चलते ग्रामीणों का जीवन संकटमय व्यतीत हो रहा है। यहां के लोग बिजली की सुविधा से वंचित हैं, जिसके कारण उनकी दैनिक दिनचर्या अस्त.व्यस्त हो गई है। बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है, वे रात को पढ़ाई नहीं कर पा रहे हैं। गाँव में बिजली न होने से पानी का भी संकट बना हुआ है।

## भाजपा प्रदेश महामंत्री ने सेमरिया मंडल में सैकड़ो लोगों को दिलाई भाजपा की सदस्यता

**मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र।** भारतीय जनता पार्टी द्वारा चलाए जा रहे संगठन पर्व सदस्यता अभियान के अंतर्गत मध्य प्रदेश भाजपा के प्रदेश महामंत्री एवं रीवा संभाग के संगठन प्रभारी रणवीर सिंह रावत ने सेमरिया मंडल में भाजपा जिला अध्यक्ष के साथ प्रवास करते हुए सैकड़ो लोगों को भाजपा की सदस्यता दिलाई और हजारों लोगों को सदस्यता के लिए प्रेरित किया। लोगों को सदस्य बनाने के पश्चात मध्य प्रदेश भाजपा के प्रदेश महामंत्री श्री रावत ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी एक राष्ट्रवादी दल है। केवल और केवल भारतीय जनता पार्टी ही समाज के प्रत्येक वर्ग की चिंता करती है। देश के विकास के लिए संकल्पित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चिंतित रहते हुए आज विकास की नई इबारत लिख रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी के कारण ही आज देश दुनिया की पांचवी अर्थव्यवस्था बन गया है और आगे आने वाले कुछ वर्षों में हम दुनिया की तीसरी अर्थव्यवस्था होंगे। इसके लिए आप सभी का भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण करना अनिवार्य है। श्री रावत ने कहा कि हमें वोट पर्याप्त मात्रा में मिलता है उसी अनुरूप भाजपा की सदस्यता भी होनी चाहिए।

## नदी में डूबे भाई-बहन, मौत

### नहाने के दौरान गहरे पानी में चले गए, घर से स्कूल जाने निकले थे

**मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली निप्र।** सिंगरौली जिले में नदी में नहा रहे दो बच्चों की डूबने से मौत हो गई। मृतक आपस में चचेरे भाई-बहन हैं। दोनों बच्चों के शव पुलिस ने बरामद कर लिए हैं। शवों को पोस्टमॉर्टम के बाद परिजनों को सौंपा गया है। घटना गुरुवार दोपहर 12 बजे की है।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शिवकुमार वर्मा ने बताया कि 6-7 बच्चे एक साथ पोड़ी-पाट गांव से बिंदूल गाव के शासकीय विद्यालय में पढ़ने के लिए जा रहे थे। तभी बिंदूल से पहले पड़ने वाली स्थानीय बिनियाह नदी के पास सभी बच्चे रुक गए और नदी में नहाने लगे। तभी 14 साल का रमेश साकेत नदी में गहराई तक उतर गया और डूबने लगा जिसे बचाने के लिए रमेश की 13 साल की चचेरी बहन खुशबू भी पानी में उतर गई। वह भी रमेश को बचाने के चक्कर में डूब गई। नदी के किनारे खड़े बाकी बच्चों ने दौड़कर आसपास के लोगों को खबर दी। लोग जब तक जमा होते और बचाने का प्रयास करते तब तक दोनों बच्चों की डूबने से मौत हो चुकी थी।

घटना की सूचना पर लंघाडोंल थाना प्रभारी पुष्पेंद्र धुर्वे मौके पर पहुंचे और दोनों के शव निकलवाए। परिवार को आर्थिक सहायता के लिए भी संबंधित विभाग को जानकारी दी गई है।

## सोन नदी में कूदा प्रेमी जोड़ा, एसडीआरएफ की टीम 10 घंटे से कर रही तलाश

**मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र।** सीधी जिले में जोगदह पुल से सोन नदी में प्रेमी जोड़ा कूद गया। करीब 10 घंटे से एसडीआरएफ की टीम लड़का और लड़की तलाश कर रही है। लेकिन गुरूवार 2 बजे तक कोई सुराग नहीं लग पाया है। घटना एक दिन पहले बुधवार 4 शाम बजे है।

ग्राम मड़वा का रहने बाइक से बृजेश सेन (18) अपनी बहन के यहां हटवा गया था। इसके वह हटवा से बहन से राजगुटखा लेने का बोलकर निकल गया। साथ ही वह अपने साथ अंजू सेन (18) को भी बाइक पर ले गया। इसके बाद जोगदह में बाइक रोककर दोनों ने सोन नदी में छलांग लगा दी।

राहगीरों की सूचना पर मौके पर बहरी और अमिलिया पुलिस पहुंची। पुलिस ने एसडीआरएफ की टीम को जानकारी दी।

एसडीआरएफ के प्लाटून कमांडर ने बताया कि बुधवार रात 9 बजे तक रेस्क्यू अभियान चलाया गया। लेकिन दोनों का कुछ पता नहीं चल पाया। गुरुवार सुबह 9 बजे से फिर से रेस्क्यू का कार्य शुरू किया गया है। लेकिन दोपहर 2 बजे तक कोई सुराग नहीं लगा है। हम लगातार सर्चिंग कर रहे हैं।

बहरी थाना प्रभारी राकेश बैंस ने बताया कि दोनों लोग क्यों कूदे हैं? इस बात की जानकारी अभी नहीं है। हम पूरे मामले की जांच कर रहे हैं। लड़का अपनी बहन के यहां गया था और शाम के समय वहां से निकला था।

वहीं लड़के के पिता मुन्नीलाल सेन ने कहा कि लड़की मेरी बड़ी बहू की बहन है। कुछ दिन पहले हमें जानकारी मिली थी कि दोनों एक-दूसरे को पसंद करते हैं। लेकिन हमने लोगों उन्हें रोक-टोक नहीं। पता नहीं उन्होंने ऐसा कदम क्यों उठाया है?

एसडीआरएफ टीम के प्लाटून कमांडर मयंक तिवारी ने बताया कि बाणसागर डैम के गेट खोल देने के बाद सोन नदी का जलस्तर बढ़ा गया है। बहाव बहुत काफी तेज है। हालांकि रेस्क्यू कार्य के लिए कल गेट को बंद कर दिया गया था। जिसकी वजह से जलस्तर धीरे-धीरे कम हो रहा है। जहां रेस्क्यू कार्य हो रहा है।

वह सोन घड़ियाल अभयारण्य का क्षेत्र है। यहां मगर और घड़ियाल की संख्या ज्यादा है। जिसकी वजह से हम एहतियात बरत रहे हैं और रेस्क्यू कार्य को सावधानी पूर्वक कर रहे हैं। इसके अलावा बहाव तेज होने की वजह से दोनों के दूर बह जाने की उम्मीद लगाई जा रही है। इसलिए रेस्क्यू कर थोड़ा आगे से हम शुरू किया है। बहाव तेज हो जाने की वजह से 10 से 12 किलोमीटर दूर तक बह जाने की आशंका का जताई जा रही है।

## 10 हजार रुपए के इनामी आरोपी को भेजा गया जेल

### 17 साल पहले किया था मर्डर, दो आरोपी पहले से जेल में

**मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र।** गढ़ीमलहरा थाना पुलिस ने 17 वर्ष पहले हुई हत्या के 10 हजार के इनामी आरोपी को जेल भेजा। इस मामले में पुलिस ने पहले ही दो आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज था। जो आजीवन कारावास की सजा काट रहे हैं।

पुलिस ने बताया कि ग्राम खोंप निवारी में 17 वर्ष पहले एक विवाद में आरोपियों ने कुल्हाड़ी से हमला कर कल्लू की हत्या कर दी थी। पुलिस ने आरोपियों के खिलाप भारतीय दंड संहिता के तहत हत्या का अपराध पंजीबद्ध किया गया था। हत्याकांड में शामिल दो उत्तर प्रदेश के जिला महोबा के हल्के रैकवार और राजू रैकवार को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया था। जिला न्यायालय ने दोनों अभियुक्तों को आजीवन कारावास की सजा से दंडित किया गया है।

हत्या की घटना में सम्मिलित तीसरे आरोपी मुन्ना रैकवार पिता रामभरोसे रैकवार निवासी ग्राम दढ़त जिला महोबा उत्तर प्रदेश की तलाश की जा रही थी। पुलिस ने तीसरे आरोपी मुन्ना रैकवार पिता रामभरोसे निवासी ग्राम दढ़त जिला महोबा हाल निवासी ग्राम बंधवा थाना मुस्करा जिला हमीरपुर को उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा से बुधवार की देर रात गिरफ्तार किया है। जिसे आज न्यायालय पेश कर जेल भेजा जा रहा है।

गढ़ीमलहरा थाना प्रभारी डीके सिंह ने बताया कि इस हत्याकांड में दो आरोपियों को पहले गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है। वहीं, तीसरा आरोपी फरार था जिसे गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश करते हुए जेल भेजा जा रहा है। इस आरोपी की गिरफ्तारी पर 10 हजार रुपए का इनाम भी रखा गया था।

## भारी बारिश के बाद अब मौसम साफ

### जिले में अब तक हुई 1055.6 मिमी बारिश, 24 घंटे में 34.8 मिमी वर्षा दर्ज

**मीडिया ऑडीटर, पन्ना निप्र।** पन्ना जिले में अब बारिश दौर थम गया है। गुरुवार सुबह से आसमान में बादलों की आवाजाही जरूर लगी रही है। वहीं मौसम विभाग ने भी आने वाले तीन दिन मौसम साफ रहने का अनुमान जताया है। जिले में अब तक 1 जून से 19 जून तक कुल 1055.6 मिमी बारिश दर्ज की जा चुकी है। जबकि जिले की औसतन वर्षा 1176.4 मिमी है। इसके मुकाबले इस साल 120.8 मिमी बारिश कम हुई है।

जिले में बीते 24 घंटे में 34.8 मिमी बारिश हुई है।

एक जून से 18 सितम्बर तक पवई क्षेत्र में सबसे अधिक 1460 मिमी, सिमरिया में 1213.1मिमी, रैपुरा में 1162.4 मिमी, अमानगंज में 1166.0 मिमी वर्षा दर्ज की गई है। इसी तरह पन्ना में 993.9 मिमी, देवेन्द्रनगर में 774.9 मिमी, गुनौर में 817.5 मिमी, शाहनगर मे 1012.1 मिमी और अजयगढ़ में 901.2 मिमी वर्षा दर्ज की गई है।

## डायरिया से प्रभावित क्षेत्र में प्रशासनिक अधिकारियों के साथ पहुंचे सांसद

**मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र।** लोकसभा संसदीय क्षेत्र के सांसद डॉ राजेश मिश्रा धौहनी विधानसभा के ग्राम हर्राई में डायरिया से प्रभावित क्षेत्र में प्रशासनिक अधिकारियों के साथ पहुँचकर ग्रामवासियों से भेंट की एवं विगत दिनों डायरिया से हुए दुःखद निधन पर उनके परिजनों से मुलाकात कर शोक संवेदना व्यक्त की। लोकसभा संसदीय क्षेत्र के सांसद डॉ राजेश मिश्रा ने इस दौरान बीमारी नियंत्रण हेतु अधिकारियों को निर्देश दिए। गांव में जिला प्रशासन और चिकित्सकों की टीम निरंतर बीमारी नियंत्रण में लगी हुई है, बीमारी का समूल इलाज हो इसके लिए सांसद डॉक्टर राजेश मिश्रा ने कहा कि हम चिंतित हैं और लगातार प्रयास कर रहे हैं कि इस बीमारी से क्षेत्र वासियों को हमेशा के लिए निजात मिले। इसके साथ ही क्षेत्र वासियों द्वारा क्षेत्र भ्रमण के दौरान पेयजल की व्यवस्था, बिजली, सड़क एवं स्कूल से संबंधित समस्याएं उठाई गयी। जिसके त्वरित निराकरण हेतु अधिकारियों को निर्देश दियें।

## केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान को मंजूरी दी

# जिले के 134 जनजातीय बहुल गांव होंगे लाभान्वित

**मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र।** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने जनजातीय बहुल गांवों और आकांजिलों में जनजातीय परिवारों के लिए परिपूर्णता लक्ष्य को अपनाकर जनजातीय समुदायों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु 79,156 करोड़ रुपये (केंद्रीय हिस्सारू 56,333 करोड़ रुपये और राज्य हिस्सारू 22,823 करोड़ रुपये) के कुल परिव्यय के साथ प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान को मंजूरी दी। बजट भाषण 2024-25 की घोषणा के अनुरूप इसमें लगभग 63,000 गांव शामिल होंगे, जिससे 5 करोड़ से अधिक जनजातीय लोगों को लाभ होगा। इसमें 30 राज्योंध्केंद्र शासित प्रदेशों के जनजातीय बहुल 549 जिले और 2,740 ब्लॉक के गांव शामिल होंगे।

उक्त अभियान के तहत सीधी जिले के 134 जनजातीय बहुल गांव लाभान्वित होंगे। विकासखंड कुसमी के 37, मझौली के 24, सिहावल के 14, सीधी के 48 तथा रामपुर नैकिन के 11 गांव लाभान्वित होंगे। उक्त के संबंध में आयोजित वीडियो कांफ्रेंस में अभियान के प्रभावी क्रियान्वयन करने के निर्देश दिए गए हैं। आज आयोजित वीडियो कांफ्रेंस में अपर कलेक्टर राजेश शाही, सहायक आयुक्त डॉ डी के द्विवेदी सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या 10.45 करोड़ है और देश भर में 705 से अधिक जनजातीय समुदाय हैं, जो दूरदराज और पहुंच से दूर क्षेत्रों में रहते हैं। प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान का उद्देश्य भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से सामाजिक बुनियादी ढांचे, स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका में महत्वपूर्ण अंतराल को भरना और पीएम जनमन (प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महा अभियान) की सीख और सफलता के आधार पर जनजातीय क्षेत्रों एवं समुदायों का समग्र और सतत विकास सुनिश्चित करना है। इस मिशन में 25 कार्यक्रम शामिल हैं, जिन्हें 17 मंत्रालयों द्वारा कार्यान्वित किया जाएगा। प्रत्येक मंत्रालयध्विभाग अनुसूचित जनजातियों के लिए विकास कार्य योजना (डीएपीएसटी) के तहत उन्हें आवंटित धनराशि के माध्यम से अगले 5 वर्षों में समयबद्ध तरीके से इससे संबंधित योजना के कार्यान्वयन के लिए उत्तरदायी होगा, ताकि निम्नलिखित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

**लक्ष्य-1: सक्षम बुनियादी ढांचे का विकासः** पात्र परिवारों के लिए पक्का घर और अन्य सुविधाएंः पात्र अनुसूचित जनजाति (एसटी) परिवारों को पीएमएवाई (ग्रामीण) के तहत नल के पानी (जल जीवन मिशन) और बिजली आपूर्ति (आरडीएसएस) की उपलब्धता के साथ पक्के आवास मिलेंगे। पात्र एसटी परिवारों की आयुष्मान भारत कार्ड (पीएमजेएवाई) तक भी पहुंच होगी। गांव के बुनियादी ढांचे में सुधारः एसटी बहुल गांवों (पीएमजीएसवाई) के लिए सभी मौसम में बेहतर सड़क संपर्क, मोबाइल कनेक्टिविटी (भारत नेट) और इंटरनेट तक पहुंच प्रदान करना, स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा में सुधार के लिए बुनियादी ढांचा (एनएचएम, समग्र शिक्षा और पोषण) सुनिश्चित करना।

**लक्ष्य-2: आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देनाः** कौशल विकास उद्यमिता को बढ़ावा देना और आजीविका (स्वरोजगार) में सुधार करना- प्रशिक्षण (कौशल भारत मिशनध्जेएसएस) तक पहुंच प्रदान करना और यह सुनिश्चित करना कि एसटी समुदाय के छात्रध्छात्राएं हर साल 10वीं/12वीं कक्षा के बाद दीर्घकालिक कौशल पाठ्यक्रमों तक पहुंच प्राप्त करें। इसके अलावा, जनजातीय बहुउद्देशीय विपणन केंद्र (टीएमएमसी) के माध्यम से विपणन सहायता, पर्यटक गृह प्रवास, कृषि, पशुपालन और मत्स्य पालन के माध्यम से एफ्आरए पट्टा धारकों को

## से.नि. सीएमएचओ डॉ. गुप्ता को सांसद ने दिलाई भाजपा की सदस्यता

**मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र।** लोकसभा संसदीय क्षेत्र के सांसद डॉ राजेश मिश्रा ने भाजपा सदस्यता अभियान के अंतर्गत सेवानिवृत्त सीएम एचओ डॉ. आई.जी. गुप्ता के निवास पहुँच कर उनसे मुलाकात की एवं भाजपा की डिजिटल सदस्यता दिलायी और मिठाई खिलाकर स्वागत किया। इस अवसर पर पूर्व जिलाध्यक्ष के के तिवारी उपस्थित रहे। भाजपा में शामिल हुए डॉक्टर गुप्ता ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी एक राष्ट्रवादी पार्टी है। उसका सदस्य होना गर्व की बात है।

# विचार

## राहुल की बातें मजाक की नहीं, चिंता का विषय

पहली बात आरक्षण के संदर्भ में हैं। उन्होंने कहा, हम आरक्षण खत्म करने के बारे में तभी सोचेंगे, जब भारत एक भेदभावरहित जगह बन जाएगा'। दूसरी बात, सिखों को लेकर है। राहुल ने कहा, भारत में सिख डरने लगे हैं कि उनको पगड़ी और कड़ा पहनने दिया जाएगा या नहीं'। इन दो बातों के अलावा विवाद का तीसरा मुद्दा उनकी मुलाकात है। वे अमेरिकी कांग्रेस के एक प्रतिनिधिमंडल से मिले, जिसमें इल्हान उमर भी शामिल थीं, जिनका भारत विरोध जगजाहिर है।

कांग्रेस पार्टी के सर्वोच्च नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को लेकर पिछले दिनों पूर्व केंद्रीय मंत्री श्रीमति स्मृति ईरानी ने एक बहुत पते की बात कही थी। उन्होंने कहा था कि, राहुल गांधी जो कहते हैं, हम भले उसे बचकाना मानें या हंसी उड़ाएं लेकिन वे अलग तरह की राजनीति कर रहे होते हैं'। उनके कहने का मतलब था कि राहुल की बातें सुनने में बचकानी या बेसिरपैर की लग सकती हैं लेकिन वे किसी न किसी राजनीतिक मकसद से अपनी बातें कहते हैं। वह उनके, उनकी पार्टी के और व्यापक गठबंधन की वृहत्तर राजनीति को साधने के लिए कही गई बात होती है। इसलिए उनकी बातों को और जिस संदर्भ में वे अपनी बात कहते हैं उसको गंभीरता से लेने की आवश्यकता है। उनकी बातें मजाक की नहीं, बल्कि चिंता का विषय हैं।

तीन दिन की अपनी अमेरिका यात्रा में वे जॉर्जटाउन यूनिवर्सिटी गए और नेशनल प्रेस क्लब में प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान उन्होंने जो बातें कहीं या इनसे अलग जिन लोगों से बेहद आत्मीय मुलाकात की है उसको पूरे संदर्भ के साथ देखेंगे तो एक बड़े खतरे का आभास होगा। इससे कांग्रेस और पूरे विपक्ष की मानसिकता समझ में आएगी और उनकी विभाजनकारी राजनीति की वास्तविक तस्वीर भी दिखेगी। अमेरिका यात्रा में राहुल की दो बातें और एक मुलाकात विवाद के केंद्र में हैं। पहली बात आरक्षण के संदर्भ में हैं। उन्होंने कहा, हम आरक्षण खत्म करने के बारे में तभी सोचेंगे, जब भारत एक भेदभावरहित जगह बन जाएगा'। दूसरी बात, सिखों को लेकर है। राहुल ने कहा, भारत में सिख डरने लगे हैं कि उनको पगड़ी और कड़ा पहनने दिया जाएगा या नहीं'। इन दो बातों के अलावा विवाद का तीसरा मुद्दा उनकी मुलाकात है। वे अमेरिकी कांग्रेस के एक प्रतिनिधिमंडल से मिले, जिसमें इल्हान उमर भी शामिल थीं, जिनका भारत विरोध जगजाहिर है।

राहुल और विपक्ष के राजनीतिक डिजाइन को समझने के लिए शुरुआत उनकी पहली बात से करते हैं।

# सिर्फ कानून बनाने से नहीं रुकेंगे महिला अपराध

**योगेंद्र योगी**

**देश के नेताओं ने समस्याओं का आसान रास्ता तलाश कर रखा है। जब भी किसी समस्या से सामना हो तो कानून बना कर अपनी जिमेदारी पूरी कर लो। समस्या की जड़ तक कोई भी राजनीतिक दल और सरकारें नहीं जाना चाहती। ऐसा नहीं है कि समस्याओं का स्थायी समाधान नहीं हो सकता, किन्तु वहां तक पहुंचने और व्यवहारिक समाधान ढूंढने में पापड़ बेलने पड़ते हैं। पश्चिमी बंगाल की ममता बनर्जी की सरकार ने महिला चिकित्सक से बलात्कार के बाद हत्या के मामले में वही किया है जो अब तक ऐसे मामलों में दूसरे राज्य या केंद्र सरकार करती रही हैं। मसलन कानून बना कर जिमेदारी पूरी कर ली। ममता सरकार ने विधानसभा में बलात्कार रोधी विधेयक सर्वसमति से पारित कर दिया। विधेयक के मसौदे में बलात्कार पीड़िता की मौत होने या उसके स्थायी रूप से अचेत अवस्था में चले जाने की सूरत में ऐसे दोषियों के लिए मृत्युदंड के प्रावधान का प्रस्ताव किया गया है। इसके अलावा मसौदे में प्रस्ताव किया गया है कि बलात्कार और सामूहिक बलात्कार के दोषी व्यक्तियों को आजीवन कारावास की सजा दी जाए, और उन्हें पेरोल की सुविधा न दी जाए।**

अपराजिता महिला एवं बाल विधेयक (पश्चिम बंगाल आपराधिक कानून एवं संशोधन) विधेयक 2024% शीर्षक वाले इस प्रस्तावित कानून का उद्देश्य बलात्कार और यौन अपराधों से संबंधित नये प्रावधानों के जरिये महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा मजबूत करना है। यह बिल पास होने के बाद राज्यपाल के पास जाएगा, उनसे पास होने के बाद राष्ट्रपति की मंजूरी के लिए जाएगा। इससे पहले 2019 में आंध्र प्रदेश दिशा विधेयक और 2020 में महाराष्ट्र शक्ति विधेयक विधानसभा से पारित हुआ था। इन दोनों विधेयकों में बलात्कार और सामूहिक बलात्कार के सभी तरह के मामलों में अनिवार्य फांसी का प्रावधान किया गया था। इन दोनों विधेयकों को राज्य विधानसभाओं ने सर्वसम्मति से पारित किया था। लेकिन दोनों विधेयकों अभी तक राष्ट्रपति की मंजूरी नहीं मिली है। भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) और भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता के साथ-साथ 2012 के पोक्सो अधिनियम के कुछ हिस्सों में संशोधन करने और पीड़िता की उम्र चाहे जो हो, कई तरह के यौन उत्पीडन के मामलों में मौत की सजा का प्रावधान है। इस बिल में महिलाओं और बच्चों के साथ होने वाले अपराध के लिए कठोर सजा का प्रावधान किया गया है। बीते महीने लागू हुए बीएनएस की धारा-64 में बलात्कार के लिए 10 साल से लेकर आजीवन कारावास तक की सजा का प्रावधान है। वहीं बीएनएस की धारा-66 में बलात्कार और हत्या और ऐसे बलात्कार, जिनमें पीड़ित निष्क्रिय हो जाती है, उनमें मौत की सजा का प्रावधान है। इसमें 20 साल की जेल की या उम्र कैद की सजा का भी प्रावधान किया गया है।

गौरतलब है कि निर्भया कांड के बाद कानून को बहुत सख्त कर दिया गया था। रेप की परिभाषा भी बदल दी थी, ताकि महिलाओं के खिलाफ अपराध में कमी लाई जा सके। पहले जबरदस्ती या असहमति से बनाए गए संबंधों को ही रेप के दायरे में लाया जाता था। लेकिन इसके बाद 2013 में कानून में संशोधन कर इसका दायरा बढ़ाया गया। इतना ही नहीं, जुवेनाइल कानून में संशोधन किया गया था। इसके बाद अगर कोई 16 साल और 18 साल से कम उम्र का कोई किशोर जघन्य अपराध करता है तो उसके साथ वयस्क की तरह ही बर्ताव किया जाएगा। हालांकि, इन सबके बावजूद सुधार नहीं हुआ है।

निर्भया कांड (2012) के बाद भारत में कई चर्चित बलात्कार की घटनाएं हुई हैं। उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में एक 17 वर्षीय लड़की के साथ बलात्कार और हत्या की घटना सामने आई। उत्तर प्रदेश के ही हाथरस जिले में एक 19 वर्षीय दलित लड़की के साथ सामूहिक बलात्कार और अत्यंत बर्बरता की गई। पीड़िता की मृत्यु के बाद, उसके शव को परिवार की अनुमति के बिना रात के समय दफनाया गया। मध्य प्रदेश के मुरैना जिले में एक महिला के साथ सामूहिक बलात्कार की घटना सामने आई। पीड़िता की शिकायत के बावजूद, पुलिस ने समय पर कार्रवाई नहीं की, जिससे व्यापक विरोध प्रदर्शन हुए। हैदराबाद में एक महिला वेटरनरी डॉक्टर के साथ बलात्कार और हत्या की घटना ने व्यापक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया। अपराधियों को पकडने के लिए पुलिस ने कार्रवाई की, और बाद में आरोपी एनकाउंटर में मारे गए, जिसने विवाद और बहस को जन्म दिया। मणिपुर में एक महिला के साथ बलात्कार और हत्या की घटना ने हाल ही में बहुत ध्यान खींचा। इस मामले ने स्थानीय हिंसा और सामाजिक अस्थिरता को भी उजागर किया। साल 2013 में केंद्र सरकार ने महिलाओं की सुरक्षा के लिए निर्भया फंड बनाया, जिसका मकसद राज्यों को महिलाओं की सुरक्षा को पुख्ता करना था। मगर, इसका अभी पूरी तरह से इस्तेमाल नहीं हो पाया है। निर्भया फंड की 9 हजार करोड़ रुपये की धनराशि का लगभग 30 प्रतिशत हिस्सा भी सही से इस्तेमाल नहीं हो पाया है। निर्भया फंड बनने से लेकर 2021-22 तक, कोष के तहत कुल आवंटन 6,000 करोड़ रुपये से ज्यादा रहा है, जिसमें से 4,200 करोड़ रुपये का ही अब तक इस्तेमाल हो पाया है।

गौरतलब है कि भारत में हर घंटे 3 महिलाएं रेप का शिकार होती हैं, यानी हर 20 मिनट में बलात्कार की एक घटना। देश में रेप के मामलों में 96 प्रतिशत से ज्यादा आरोपी महिला को जानने वाले होते हैं। रेप के मामलों में 100 में से 27 आरोपियों को ही सजा होती है, बाकी बरी हो जाते हैं। ये तीन आंकड़े बताते हैं कि सख्त कानून होने के बावजूद हमारे देश में रेप के मामलों में न तो कमी आ रही है और न ही सजा की दर यानी कन्विक्शन रेट बढ़ रहा है। केंद्र सरकार की एजेंसी नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े बताते हैं कि भारत में सालभर में महिलाओं के खिलाफ अपराध के चार लाख से ज्यादा अपराध दर्ज किए जाते हैं। इन अपराधों में सिर्फ रेप ही नहीं, बल्कि छेड़छाड़, दहेज हत्या, किडनैपिंग, ट्रैफिकिंग, एसिड अटैक जैसे अपराध भी शामिल हैं।

आंकड़े बताते हैं कि 2012 से पहले हर साल रेप के औसतन 25 हजार मामले दर्ज किए जाते थे। लेकिन इसके बाद ये आंकड़ा 30 हजार के ऊपर पहुंच गया। 2013 में ही 33 हजार से ज्यादा मामले दर्ज हुए थे। 2016 में तो आंकड़ा 39 हजार के करीब पहुंच गया था। साल 2022 में औसतन हर दिन करीब रेप के 87 मामले दर्ज किए गए। इसी साल 248 रेप या गैंगरेप के साथ हत्या। 31,516 रेप, 3,288 रेप के प्रयास और 83,344 मामले महिला की गरिमा को ठेस पहुंचाने के इरादे से किए गए हमले के दर्ज किए गए। इन आकंड़ों से जाहिर है कि निर्भया कांड के बाद भी देश में महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों की तस्वीर नहीं बदली है। दरअसल नेताओं और सरकारों के इरादों में कमी है। देश में महिलाओं की सामूहिक तरक्की, पर्याप्त शिक्षा, बुनियादी सुविधाएं, रोजगार और अन्य सुविधाओं में इजाफा नहीं होगा तब तक निर्भया जैसी घटनाओं पर सिवाए चीख-पुकार मचाने से कुछ नहीं होगा। यह सब करना सरकारों के लिए आसान नहीं है। इसलिए जब भी कोई वारदात होती है तब कानून में कुछ और धाराएं जोड़ कर सरकारें अपनी दायित्व की इतिश्री कर लेती हैं।

### यूपीआई भुगतान का चलन

क्या सरकार यह सुनिश्चित कर सकती है कि यूपीआई एग्रीगेटर अपना बोझ यूजर्स पर ट्रांसफर ना करें? अगर वह ऐसा नहीं कर सकती, तो उसका मतलब छोटे ऑनलाइन भुगतान को हतोत्साहित करना समझा जाएगा। यूपीआई के जरिए दो हजार रुपये से कम के भुगतान पर 18 प्रतिशत जीएसटी लगाने का प्रस्ताव फिलहाल टल गया है। सोमवार को हुई जीएसटी काउंसिल की बैठक में इस पर सहमति नहीं बनी, इसलिए इसे विचार के लिए फिटमेंट कमेटी को भेज दिया गया है। अब कमेटी बताएगी कि यूपीआई पेमेंट पर टैक्स लगाने के क्या प्रभाव होंगे। प्रस्ताव यह है कि ऐसे हर भुगतान पर पेमेंट एग्रीगेटर को (यानी जिस ऐप के जरिए भुगतान किया गया हो), 18 प्रतिशत जीएसटी देना होगा। ये आशंका ठोस है कि ये एग्रीगेटर खुद पर पडने वाले टैक्स के बोझ के कारण सेवा को महंगा बना देंगे। अंततः यूपीआई के जरिए 2000 रुपये से कम का भुगतान अभी की तरह बिना लागत के नहीं रह जाएगा। मुद्दा है कि क्या सरकार यह सुनिश्चित कर सकती है कि एग्रीगेटर अपना बोझ यूजर्स पर ट्रांसफर ना करें?

# विपक्ष पर दबाव का अरविंद केजरीवाल का आतिशी दांव

**ललित गर्ग**

अरविंद केजरीवाल राजनीति के चतुर खिलाड़ी हैं। उन्होंने राजनीति में कुछ मौलिक प्रतिस्थापनाएं की है, बने-बनाये रास्तों पर न चलकर नये रास्ते इजाद किये हैं। वे संकटों को अवसर में बदलने वाले करिश्माई व्यक्तित्व भी हैं। उनकी राजनीति अनेक विरोधाभासों एवं विसंगतियों से भरी रही है, उनके व्यवहार एवं वचनों में विरोधाभास स्पष्ट परिलक्षित होते रहे हैं, लेकिन ये ही विरोधाभास उनकी राजनीतिक चमक का कारण भी बने हैं। क्योंकि राजनीति में सब जायज माना जाता है। सर्वोच्च न्यायालय से सशर्त जमानत मिलने से खुद को बंधा महसूस करते हुए उन्होंने इस्तीफे का धारदार दांव चलाकर राजनीतिक जगत में एक हलचल पैदा कर दी। वहीं पार्टी में संभावनाओं भरे अनेक चेहरों के होने के बावजूद उन्होंने आतिशी को दिल्ली का मुख्यमंत्री बनाया, जबकि वह वरिष्ठता क्रम में निचले पायदान पर खड़ी थी, लेकिन केजरीवाल ऐसे चौंकाने वाले फैसले पहले भी लेते रहे हैं। लेकिन इस तरह वे जनादेश का मज़ाक भी बनाते रहे हैं तो संवैधानिक स्थितियों की धता भी करते रहे हैं। अरविंद केजरीवाल साहस के कदम एवं चतुराई की आंख लेकर परम्परागत राजनीति की जंजीरों को तोड़कर आगे निकलते रहे हैं। संभावनाएं की जा रही थी कि केजरीवाल आम आदमी पार्टी के किसी वरिष्ठ नेता को मुख्यमंत्री बना सकते हैं। अधिक संभावनाएं उनकी पत्नी सुनीता केजरीवाल को मुख्यमंत्री बनाये जाने की थी। क्योंकि क्षेत्रीय दलों में किसी राजनीतिक या कानूनी संकट के चलते परिवार के ही किसी सदस्य को सत्ता की बागडोर सौंप देने परंपरा रही है। ताकि स्थितियां सामान्य होने पर फिर मुख्यमंत्री की गद्दी आसानी से वापस ली जा सके। इसके अनेक उदाहरण है, जिनमें बिहार में चारा घोटाले में घिरने के बाद लालू यादव ने पत्नी राबड़ी देवी को सत्ता की बागडोर सौंपी थी। बहरहाल, केजरीवाल ने जेल से बाहर आते ही अपने तरकश से जो तीर चले हैं, उनकी धार एवं तीक्ष्णता को महसूस किया जा सकता है। इन तीरों से हरियाणा व जम्मू कश्मीर चुनाव समेत अन्य राष्ट्रीय मुद्दों में उलझी भाजपा व कांग्रेस पर केजरीवाल ने मनोवैज्ञानिक राजनीतिक दबाव तो बना ही दिया है। हरियाणा में स्वतंत्र चुनाव लड़ने का निर्णय लेकर उन्होंने सत्ता के गठन में स्वयं को एक ताकतवर मोहरे के रूप में प्रस्तुत करने का चतुराई भरा खेल भी खेला है। दिल्ली में भी उन्होंने अपनी निस्तेज होती स्थितियों को मजबूती दी है।

दरअसल, केजरीवाल भ्रष्टाचार के विरोध में आन्दोलन के योद्धा के रूप में वर्ष 2014 के इस्तीफे के दांव की तरह 2015 में आम आदमी पार्टी को मिली भारी जीत का अध्याय दोहरा देना चाहते हैं। लेकिन इस बार की स्थितियां खुद भ्रष्टाचार में लिप्त होने से खासी चुनौतीपूर्ण व जोखिमभरी हैं। निस्संदेह, यह दांव मुश्किल भी पैदा कर सकता है क्योंकि पिछले लोकसभा चुनाव में पार्टी को एक भी सीट नहीं मिली थी। भले ही केजरीवाल अपने को, समय को पहचानने वाला साबित कर रहे हो, लेकिन वे अपने देश को, अपने पैरों की जमीन को एवं राजनीतिक मूल्यों को नहीं पहचान रहे हैं। 'आप' की राजनीति नियति भी विसंगति का खेल खेलती रहती है। पहले जेल जाने वालों को कुर्सी मिलती थी, अब कुर्सी वाले वाले जेल जा रहे हैं। यह नियति का व्यंग्य है या सबक? आप के शीर्ष नेताओं के लिये पहले श्रद्धा से सिर

झुकता था अब शर्म से सिर झुकता है। कैसे आप की राजनीति इस शर्म के साथ जनता से मुखातिब होगी और जनता क्या जबाव देगी, यह भविष्य के गर्भ में है। जिन अप्रत्याशित हालात में एवं बहुत कम समय के लिये आतिशी को दिल्ली का मुख्यमंत्री बनाया गया है, वे बेहद चुनौतीपूर्ण हैं। विधानसभा चुनावों से ठीक पहले राज्य में नेतृत्व परिवर्तन के कई उदाहरण हाल के वर्षों में दिखे हैं, लेकिन यह मामला उन सबसे अलग है। पिछले करीब दो साल न केवल आम आदमी पार्टी के लिए बल्कि दिल्ली सरकार के लिए भी इस मायने में चुनौतीपूर्ण रहे कि एक-एक कर उसके कई बड़े नेता और मंत्री जेल भेज दिए गए। दिल्ली का विकास मुफ्त की संस्कृति की भेट चढ़कर विकास को अवरुद्ध किये हुए हैं। मुख्यमंत्री केजरीवाल के जेल जाने के बाद संकट और गहराया। इन संकटपूर्ण हालातों में आतिशी ने पार्टी का प्रभावशाली ढंग से बचाव किया। उन्होंने सौरभ भारद्वाज और अन्य साथियों के साथ मिलकर सड़क से लेकर मीडिया तक आम आदमी पार्टी की जंग लड़ी, उससे कार्यकर्ताओं में उनकी एक जुझारू छवि बनी है। ऐसे में, उनसे उम्मीदें भी बढ़ गई हैं। क्या अतिशी अपने राजनीतिक कौशल से यह पद पाया है या वे केजरीवाल की राजनीति का एक मोहरा-भर बनी है? उनके हिस्से में यह पद तब आया जब पार्टी के दो सबसे बड़े नेताओं-अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया-ने कह दिया कि वे नए सिरे से जनादेश हासिल करने के बाद ही पद पर बैठेंगे। अगर पार्टी जनादेश हासिल नहीं कर पाती तब तो उन्हें पद छोड़ना ही पड़ेगा, अगर पार्टी चुनाव जीतती है तब भी मुख्यमंत्री पद से उनका हटना लगभग तय है। इन स्थितियों में कांटों भरा ताज पहनकर उनके कामकाज एवं प्रभावी नेतृत्व का क्या औचित्य है? अतिशी एक वफादार एवं जिम्मेदार नेता के रूप में अपनी छाप छोड़ने में कामयाब रही है। पार्टी के लिये उनके समर्पण एवं अटूट निष्ठा की मुद्रा विधायक दल की नेता चुने जाने के वक्त भी सामने आयी, जब आतिशी ने सार्वजनिक रूप से यह कहा कि वह सिर्फ अगले चुनाव तक पदभार संभाल रही हैं, पार्टी के भीतर किसी नए केंद्र की आशंका को तिरोहित करना तो है ही, कहीं न कहीं यह वरिष्ठ नेताओं की आहत महत्वाकांक्षाओं पर मरहम रखना भी है। आतिशी का यह पहला कार्यकाल है, और किसी गैर-राजनीतिक पारिवारिक पृष्ठभूमि की महिला का पांच साल के भीतर यूं मुख्यमंत्री की कुरसी तक पहुंचने का यह विरल उदाहरण भी है। अतिशी दिल्ली जैसे सुबे की मुखिया बनी हैं, जिस दिल्ली ने सुषमा स्वराज और शीला दीक्षित जैसी दिग्गज महिला नेताओं का शासन देखा है। कुल मिलाकर, दिल्ली में शुरू हुए आप के इस नए प्रयोग और उसके नतीजों पर सबकी नजरें होंगी।

अरविंद केजरीवाल ने महाराष्ट्र और झारखंड के साथ ही दिल्ली विधानसभा का भी चुनाव कराने की मांग की है, उनकी यह मांग अस्वीकृत हो गयी है, फिर भी अगले साल फरवरी के पहले पखवाड़े तक दिल्ली में चुनाव कराने होंगे।

# कार्ययोजना बना कर उल्लास कार्यक्रम का करें क्रियान्वयन : कलेक्टर

## दूरस्थ अंचल के लोगों को मेडिकल यूनिट एवं आयुष्मान कार्ड से करें लाभान्वित

### कलेक्टर ने ली साप्ताहिक समय सीमा की बैठक

**मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र।** नव भारत साक्षरता कार्यक्रम (उल्लास) के तहत जिले के 15 वर्ष से ऊपर के निरक्षर लोगों को जो पढ़ना-लिखना नहीं जानते उन्हें साक्षर बनाने हेतु उल्लास कार्यक्रम का बेहतर कार्ययोजना बनाए, ताकि अधिक से अधिक युवाओं को इसका लाभ मिल सके, उक्त बातें आज कलेक्टर डी. राहुल वेंकट ने जिला कार्यालय के सभाकक्ष में आयोजित साप्ताहिक समय सीमा की बैठक में कही।

कलेक्टर डी राहुल वेंकट ने विभागीय कार्यों की प्रगति की समीक्षा करते हुए कलेक्टर, एसपी कॉन्फ्रेंस में मुख्यमंत्री के द्वारा दिये गये निर्देशों का परिपालन करने के लिए विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया । साथ ही उन्होंने जिले के प्रगतिरत कार्यों का समय सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए । स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा करते हुए उन्होंने विकसित भारत संकल्प यात्रा के तर्ज पर शिविर आयोजित कर मोबाईल मेडिकल यूनिट के माध्यम से जिले के दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों के ग्रामीणों को स्वास्थ्य सुविधाओं एवं आयुष्मान कार्ड से लाभान्वित करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्कूलों के निर्माणाधीन कार्यों की समीक्षा करते हुए स्कूल शिक्षा विभाग को स्कूल मरम्मत एवं निर्माण कार्यों में गुणवत्ता लाने व कार्य में लापरवाही करने वाले ठेकेदारो पर कार्यवाही के निर्देश दिए। कलेक्टर वेंकट ने राजस्व प्रकरणों की समीक्षा करते हुए लंबित प्रकरणों का समयदूसीमा में निराकरण के निर्देश दिए।

जिससे राज्य सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ जिले के जनसमान्य को मिल सके। उन्होंने प्रधानमंत्री जनमन कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए योजनाअंतर्गत सड़क, बिजली, निर्माण, पेयजल जैसे विभिन्न कार्यों का अविलंब पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रधानमंत्री जनमन योजना अंतर्गत जिले में शिविर लगाकर आधार कार्ड, जनधन खाता, आयुष्मान कार्ड, वनाधिकार पत्र, राशन कार्ड, जाति प्रमाण पत्र से हितग्राहियों को लाभान्वित करने एवं मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। कलेक्टर वेंकट ने स्कूली छात्र- छात्रों के आय-जाति प्रमाण पत्र बनाये जाने के निर्देश दिए। उन्होंने जल जीवन मिशन की समीक्षा करते हुए प्रत्येक घर में नल कनेक्शन पहुंचाने का कार्य अति शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने सीएम, कलेक्टर जनदर्शन में प्राप्त आवेदनों का समय सीमा में निराकरण के निर्देश दिए। इस दौरान एसडीएम प्रवीण कुमार भगत, लिंगराज सिदार, विजयेंद्र सारथी, सर्व तहसीलदार, सर्व जनपद सीईओ, सर्व नगर पंचायत सीएमओ सहित जिला अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

## जूक क्लब में मेयर के भतीजे ने की मारपीट

### शोएब ढेबर ने एक व्यापारी को जड़े थप्पड़, गिरफ्तारी के बाद कोर्ट ने जेल भेजा

**मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी।** रायपुर के जूक क्लब बार में शोएब ढेबर ने एक व्यापारी के साथ मारपीट की। बुधवार रात पार्किंग में गाड़ी रिवर्स करने के दौरान विवाद हुआ था। पीड़ित के एफआईआर दर्ज कराने के बाद तेलीबांधा पुलिस ने आरोपी शोएब को गिरफ्तार कर लिया है। शोएब शराब घोटाले के आरोपी अनवर ढेबर का बेटा और मेयर एजाज ढेबर का भतीजा है।

पीड़ित अब्दुल मोबिन ने पुलिस को बताया कि वह ट्रांसपोर्टिंग और ट्रेडिंग का काम करता है। बुधवार को वह दोस्त शुभम डागा के साथ खाना खाने के लिए वीआईपी रोड गया हुआ था। इस दौरान होटल शीतल इंटरनेशनल स्थित जूक क्लब-बार के बाहर बीएमडब्ल्यू कार खड़ी थी। उसने गाड़ी को हटवाने के लिए हॉर्न दिया, जिससे कार रिवर्स करे। इस पर शोएब ढेबर ने कार से उतरकर बदसलूकी की।

**तीन आरोपियों ने मिलकर की पिटाई:** विवाद के दौरान शोएब के साथ उसके दोस्त अनस और अतीक मेमन भी थे। तीनों ने मिलकर अब्दुल मोबिन के गालों पर थप्पड़ जड़ दिए। साथ ही व्यापारी के साथ गाली-गलौज कर जान से मारने की धमकी भी दी। इस मारपीट के बाद पीड़ित के गाल में चोट आई है।

**पुलिस ने गिरफ्तार किया:** इस विवाद के बाद आसपास मौजूद लोगों ने झगड़े को शांत कराया। फिर पीड़ित अब्दुल ने तेलीबांधा थाने पहुंचकर मामले में शिकायत की। पुलिस ने जांच के बाद शोएब ढेबर और अन्य के खिलाफ मारपीट के मामले में एफआईआर दर्ज की। इसके बाद शोएब को गिरफ्तार भी कर लिया गया।

**शोएब का वकील बोला- राजनीतिक बदला लेने जेल भेजा:** इस मामले को लेकर शोएब ढेबर के वकील अमीन खान ने बातचीत की। उन्होंने बताया कि पुलिस ने जो एफआईआर में धाराएं लगाई है वह जमानती है। शोएब को थाने से जमानत भी मिल गई। इसके बाद भी राजनीतिक बदला लेने के लिए उस पर प्रतिबंधात्मक कार्रवाई कर जेल भेजा गया है। हमने कोर्ट के आदेश के मुताबिक, 20 हजार रुपए का जमानतीय बॉन्ड भी पेश किया है।

**युवती से साइबर स्टॉकिंग का भी केस है दर्ज:** इससे पहले, ढेबर के घर सुपरवाइजर रहे इमरान मेघजी ने दूसरी एफआईआर सिविल लाइन थाने में दर्ज कराई थी। इसमें अनवर ढेबर के साथ ही उसके बेटे शोएब ढेबर, जुनैद ढेबर और एक अन्य को आरोपी बनाया गया है। इमरान ने बताया कि, वह ढेबर के प्रोजेक्ट में सुपरवाइजर के तौर पर काम करता था। जब वह काम छोड़कर चला गया तो उसे डरा-धमकाकर बुलाया गया।चारों आरोपियों ने उससे मारपीट की और जान से मारने की धमकी दी।

इमरान ने यह भी आरोप लगाया है कि, धमकी देकर उससे किसी लड़की की साइबर स्टॉकिंग कराई गई। आरोप है कि, लड़की के मोबाइल से जानकारी निकलवाने के लिए छेड़छाड़ की गई।

## जिले में अब तक 1054.4 मिमी औसत वर्षा की गयी दर्ज

**मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र।** मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले में 01 जून से 19 सितंबर 2024 तक 1054.4 मिमी औसत वर्षा दर्ज की गई है।

कार्यालय कलेक्टर भू-अभिलेख शाखा से प्राप्त जानकारी के अनुसार 1 जून से अब तक सर्वाधिक वर्षा 1210.6 मिमी मनेन्द्रगढ़ तहसील में तथा न्यूनतम 913.0 मिमी खड़गवां तहसील में दर्ज की गई है।

इसके अलावा तहसील केल्हारी में 1182.1 मिमी, तहसील चिरमिरी में 973.2 मिमी, तहसील कोटाडोल में 1067.9 मिमी, तहसील भरतपुर में 979.6 मिमी तथा तहसील खड़गवां में 913.0 मिली मीटर वर्षा दर्ज की गई है।

## पति से विवाद के बाद पत्नी ने लगाई फांसी

### भिलाई में पिता ने कहा- ये आत्महत्या नहीं हत्या है, मां-बेटे ने मिलकर मार डाला

**मीडिया ऑडीटर, भिलाई एजेंसी।** दुर्ग के भिलाई के कृष्णा ग्रैंड सिटी निवासी प्रशांत मिश्रा की पत्नी रोशनी मिश्रा (30) ने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। फांसी लगाने का कारण पति-पत्नी के बीच विवाद बताया जा रहा है। वहीं, रोशनी के पिता सेतबंधु तिवारी ने आरोप लगाया है कि, उनकी बेटी ने आत्महत्या नहीं की है, बल्कि उसकी हत्या की गई है। घटना स्मृति नगर थाना क्षेत्र का है। स्मृति नगर चौकी प्रभारी वंदिता पानिकर ने बताया कि, बुधवार तड़के करीब 4 बजे कोहका में कृष्णा ग्रैंड सिटी निवासी प्रशांत मिश्रा की पत्नी रोशनी ने खुदकुशी कर ली। रोशनी मिश्रा की शादी 3 साल पहले प्रशांत से हुई थी। उनकी एक 17 महीने की बेटी है।

**देर रात पति-पत्नी के बीच हुआ विवाद:** मंगलवार को प्रशांत गणेश विसर्ज में दोस्तों के साथ राजनांदगांव गया था। रात में नहीं लौटा तो रोशनी और उसके बीच फोन पर झगड़ा हुआ। प्रशांत बुधवार को तड़के 3 बजे घर पहुंचा तो फिर दोनों के बीच विवाद हुआ। इस पर प्रशांत ऊपरी मंजिल के अपने कमरे से बेटी को लेकर नीचे सोने आ गया। थोड़ी देर बाद रोशनी अपनी बेटी को ले गई। ऊपर जाकर उसने एक घंटे बाद सुबह 4 बजे फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। मां को फांसी पर झूलता देख बच्ची जोर-जोर से चिल्लाने और रोने लगी। बेटी की आवाज सुनकर पति ऊपर पहुंचा तो कमरा अंदर से बंद था। किसी तरह खिड़की के रास्ते वह अंदर पहुंचा, तो पत्नी को फंदे से नीचे उतारा, लेकिन तब तक रोशनी की मौत हो चुकी थी। पुलिस ने पंचनामा कार्रवाई करने के बाद शव को पीएम के लिए लाल बहादुर शास्त्री अस्पताल सुपेला भेज दिया। इसके बाद पीएम हुआ और शव परिजनों को सौंप दिया गया। पुलिस परिजनों से पूछताछ कर जांच कर रही है।

**पुलिस ने रोशनी को फोन किया जब्त:** जांच के दौरान पुलिस को कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। पुलिस ने रोशनी का मोबाइल जब्त किया है। पुलिस का कहना है कि, रोशनी के स्टेटस में एक सुसाइड मैसेज मिला है। जिसमें खुदकुशी के लिए उसने किसी को भी जिम्मेदार ना ठहराने की बात लिखी है।

**सास रुंगटा इंजीनियरिंग में वार्डन:** प्रशांत की मां रुंगटा इंजीनियरिंग कॉलेज के हॉस्टल में वार्डन हैं। वो रोज की तरह नाइट ड्यूटी पर हॉस्टल गई थी।

**पिता ने कहा- मां-बेटे ने मिलकर मारा:** रोशनी के पिता सेतबंधु तिवारी डायलिसिस पर हैं और काफी बीमार रहते हैं। उन्होंने कहा कि, उनकी तीन बेटी और एक बेटा में रोशनी सबसे बहादुर थी। वो कभी खुदकुशी नहीं कर सकती है। प्रशांत और उसकी मां मिलकर बेटी को प्रताड़ित कर मारपीट करते थे। उन्होंने कहा कि, ये खुदकुशी नहीं हत्या है। पुलिस को इसकी जांच करनी चाहिए।

## गोवा के युवक ने रायपुर में युवती से किया रेप

### बोला-ताजमहल देखने आगरा चलो, वहीं शादी करेंगे, मारपीट कर जान से मारने की दी धमकी

**मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी।** गोवा के युवक ने रायपुर में एक युवती से होटल में रेप किया है। होटल में काम करने के दौरान दोनों की दोस्ती हुई, फिर उसे झांसे में लेकर दुष्कर्म किया। युवती को कहा कि, ताजमहल देखने के लिए आगरा चलो वहीं शादी कर लेंगे। लेकिन उसने आगरा पहुंचकर युवती से शादी करने के बजाए मारपीट कर जान से मारने की धमकी दी। मामला गंज थाना क्षेत्र का है।

पीड़िता ने पुलिस को शिकायत में बताया कि, वो रायपुर में एक होटल में काम करने के दौरान आरोपी प्रिंस डी सिल्वा से मिली। प्रिंस गोवा का रहने वाला है। दोनों के बीच दोस्ती हो गई तो वह अक्सर फोन पर बात करने लगे। आरोपी युवती को कुछ काम के बहाने रेलवे स्टेशन के पास स्थित एक होटल पर लेकर गया। जहां उसने अपने प्यार का इजहार कर जबरन रेप किया।

**कहा- हम दोनों आगरा में शादी कर लेंगे:** दुष्कर्म के बाद जब युवती ने विरोध किया, तो उसने कहा कि हम दोनों शादी कर लेंगे। आरोपी प्रिंस ने युवती को कहा कि ताजमहल देखने आगरा चलो, वहीं हम शादी कर लेंगे। जिसके बाद दोनों आगरा पहुंच गए। वहां आरोपी ने होटल लिया। फिर ने जब उससे शादी की बात की तो वह मुकर गया।

**मारपीट कर जान से मारने की दी धमकी:** उसने आगरा के होटल में युवती के साथ वाद विवाद कर मारपीट किया। जिसके बाद युवती अपनी जान बचाकर घर वापस आ गई। आरोपी की हिम्मत बढ़ गई तो वह युवती के घर जाकर जान से मारने की धमकी देते हुए शादी करने से मुकर गया। फिर वह फरार हो गया। जिसके बाद युवती ने गंज पुलिस थाने में जाकर शिकायत दर्ज कराई।

इस दौरान आरोपी फिर एक बार पीड़िता से मिलने के लिए रायपुर पहुंचा। तो पुलिस ने उसे घेराबंदी करके पकड़ लिया। पुलिस ने आरोपी प्रिंस डी सिल्वा निवासी उत्तर गोवा को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड में सेंट्रल जेल भेज दिया है।

## पति ने पत्नी को मार डाला

### नए कपड़े नहीं दिलाने पर हुआ विवाद, चूल्हा जलाने रखी लकड़ी से सिर पर किया वार

**मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ एजेंसी।** छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले में नए कपड़े नहीं खरीदने को लेकर हुए विवाद में पति ने पत्नी की हत्या कर दी। वारदाता लैलूंगा थाना क्षेत्र की है। पुलिस आगे की कार्रवाई में जुट गई है। जानकारी के मुताबिक ग्राम फूलीकुंडा में रहने वाला पंचराम पंडो पत्नी सुमारी पंडो (25) को लेकर लारीपानी सप्ताहिक बाजार गया था। यहां दोनों ने खरीदारी की, जिसके बाद सुमारी ने अपने लिए कुछ कपड़े खरीदने की बात कही।

तब पंचराम ने कपड़ा दिलाने से इनकार कर दिया। ऐसे में दोनों के बीच विवाद हो गया। बाजार से दोनों घर लौट रहे थे, लेकिन विवाद खत्म नहीं होने पर पंचराम उसे आधे रास्ते में छोड़कर अकेले घर चला गया। इसके बाद महिला भी किसी तरह घर पहुंची, लेकिन रात में करीब 11 बजे उनके बीच फिर से कपड़ा नहीं दिलाने की बात को लेकर विवाद हुआ। इस दौरान पंचराम ने घर में रखे चूल्हा जलाने के लकड़ी से पत्नी के सिर के पीछे और आंख के पास हमला कर दिया। इससे सुमारी की मौके पर ही मौत हो गई।

**रात भर लाश को घर पर रखा:** बताया जा रहा है कि महिला की सांसे थम गई थी, लेकिन पति उसे बार-बार उठाने का प्रयास कर रहा था और रात भर लाश को घर में रखे रहा। इस दौरान उसके माता-पिता अलग कमरे में सो रहे थे। सुबह मामले की जानकारी परिजनों को हुई तो मामले की सूचना सरपंच को दी गई। जिसके बाद सरपंच ने पुलिस को इसकी जानकारी दी।

**पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार:** मामले में लैलूंगा पुलिस ने बताया कि घटना की सूचना मिलने के बाद मौके का निरीक्षण किया गया और लकड़ी को जब्त कर लिया गया है। जिससे उसने अपनी पत्नी के सिर पर वार किया था। बताया जा रहा है कि करीब चार साल पहले दोनों ने प्रेम विवाह किया था और उनका एक छोटा बच्चा है। फिलहाल, मामले में पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड में भेज दिया है।

## वजन त्यौहार : आंगनबाड़ी केन्द्रों में पोषण स्तर का आकलन जारी

**मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र।** प्रदेश में राष्ट्रीय पोषण माह महाअभियान के अंतर्गत वजन त्यौहार मनाया जा रहा है। जिले में महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा आंगनबाड़ी केन्द्रों में बच्चों के पोषण स्तर का लगातार आकलन किया जा रहा है। इस प्रक्रिया के तहत, जिले के प्रत्येक आंगनबाड़ी केन्द्र में 0 से 6 साल तक के बच्चों के पोषण स्तर का आकलन किया जाता है।

महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संचालित आंगनबाड़ी केन्द्रों में, बच्चों के पोषण स्तर में सुधार लाने और कुपोषण से होने वाले नुकसान के बारे में गर्भवती माताओं और पालकों को जागरूक किया जा रहा है। केन्द्रों में बच्चों के वजन त्यौहार मनाने, सही पोषण, देश रोशन, और "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" अभियान चलाए जा रहे हैं। इसके साथ ही, पौष्टिक आहार की जानकारी देते हुए माताओं को बच्चों के भोजन में हरी सब्जियां, चावल, दाल, और रोटी को शामिल करने की सलाह दी जा रही है। पोषण के विभिन्न स्रोतों के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की जा रही है।

## महिला ने पिकअप वाहन में दिया बच्चे को जन्म

### भगवान विश्वकर्मा की मूर्ति विसर्जित करने जा रहा था परिवार, मां-बच्चा दोनों स्वस्थ

**मीडिया ऑडीटर, धमतरी एजेंसी।** छत्तीसगढ़ के धमतरी में गर्भवती महिला ने पिकअप वाहन में बच्चे को जन्म दिया। रायपुर से गंगरेल डैम घूमने आई महिला को अचानक प्रसव पीड़ा हुई, और अस्पताल पहुंचने से पहले ही महिला का प्रसव हो गया। हालांकि, अब मां और बच्चा दोनों स्वस्थ बताए जा रहे हैं।

दरअसल, रायपुर के महोबा पारा में रहने वाली राजकुमारी बारले अपने परिवार के साथ कुल 8 लोग भगवान विश्वकर्मा की मूर्ति विसर्जित करने के लिए गंगरेल डैम आ रही। गंगरेल डैम से 2 किलोमीटर पहले ही गर्भवती को प्रसव पीड़ा होने लगी।

**पिकअप वाहन में महिला ने दिया बच्चे को जन्म:** इसके बाद परिजन वाहन को वापस धमतरी की ओर मोड़ कर रुद्री रोड होते हुए शहर पहुंचे,और अस्पताल को ढूंढते रहे। कुछ दूर बाद अस्पताल की ओर जाने का चिन्ह दिखा और वाहन सीधा अस्पताल की ओर लेकर आया गया। लेकिन अस्पताल पहुंचते ही पिकअप वाहन में ही महिला की डिलीवरी हो गई। बताया जा रहा है कि डॉक्टरों की टीम भी मौके पर पहुंच गई थी। डॉक्टरों ने ही पिकअप वाहन में सफल डिलीवरी करवाई। फिलहाल महिला और नवजात बच्ची को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां दोनों की स्थिति स्वस्थ बताई जा रही है।

## "कलेक्टर और एसपी की बैठक, नशामुक्ति और डीजे ध्वनि प्रदूषण पर कड़ी कार्यवाही के निर्देश"

**मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र।** कलेक्टर डी. राहुल वेंकट और एसपी चंद्रमोहन सिंह ने कलेक्ट्रेट के सभाकक्ष में नशा मुक्ति और डीजे पर कार्यवाही हेतु बैठक ली। कलेक्टर वेंकट ने सभी अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि वे जुलूस, शादी-बारात के दौरान डीजे बजाने पर पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी को निगरानी रखने और लाउडस्पीकर के दुरुपयोग पर सख्त कार्यवाही करें।

एसपी चंद्रमोहन सिंह ने जिले में नशा मुक्ति अभियान और डीजे के अत्यधिक ध्वनि प्रदूषण पर सख्त कार्यवाही के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार पूरे राज्य में डीजे की ध्वनि सीमा को 55 डेसिबल तक सीमित रखने का निर्देश दिया गया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के तहत डीजे और लाउडस्पीकर के नियमों का उल्लंघन करने पर जुर्माना व जब्ती की कार्रवाई की जाएगी। एसपी सिंह ने यह भी कहा कि रात 10 बजे के बाद डीजे बजाने पर तत्काल प्रभाव से कड़ी कार्यवाही की जाएगी।

इसके अतिरिक्त एसपी सिंह ने जिले में नशामुक्ति अभियान को तेजी से लागू करने के निर्देश दिए। छोटे बच्चों में नशे की प्रवृत्ति को रोकने और नशीली दवाइयों की बिक्री करने वाले मेडिकल स्टोर्स पर कड़ी कार्यवाही करने का निर्देश दिए। प्रशासन और पुलिस के समन्वय से पूरे जिले में नशा मुक्ति अभियान चलाया जाएगा।

## किसान की करंट लगने से मौत

### खेत में तार से 2 घंटों तक चिपका रहा, दूसरे केस में हसदेव नदी में डूबा व्यक्ति

**मीडिया ऑडीटर, जांजगीर-चांपा एजेंसी।** छत्तीसगढ़ के जांजगीर-चांपा जिले में करंट की चपेट में आने से किसान की मौत हो गई। वहीं चांपा थाना क्षेत्र के हसदेव नदी में नहाने गए युवक की पानी में डूबने से मौत हुई है। दोनों के शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए अस्पताल भेजा गया है। सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र के वार्ड नंबर 18 में जोबी का रहने वाला किसान नरेंद्र कश्यप (27) गुरुवार की सुबह करीब 8 बजे खेत में दवा छिड़कने के लिए गया हुआ था। इस बीच खेतों में लगे फेंसिंग तार में करंट प्रवाहित हो रहा था। युवक फेंसिंग तार की चपेट में आ गया।

**2 घंटों तक तार से चिपका रहा:** युवक 2 घंटों तक तार से चिपका रहा, जिससे घटनास्थल पर ही उसकी मौत हो गई। बताया जा रहा है कि एक ग्रामीण ने घर बनाने के लिए अवैध रूप से बिजली कनेक्शन लिया गया था। तार का कुछ हिस्सा फेंसिंग तार से छू रहा था। परिजनों ने आरोपी पर कार्रवाई की मांग कर मुआवजे की मांग की है।

**हसदेव नदी में डूबने से मौत:** चांपा थाना क्षेत्र के हसदेव नदी पाढी घाट में गुरुवार की सुबह 6 बजे रामकुमार केवट (40) नहाने पहुंचा हुआ था।

## वेयर हाउसिंग कार्पोरेशन के शाखा प्रबंधक भेड़रहा और शाखा प्रभारी क्योंटी केप रीवा निलंबित

**भोपाल (एजेंसी)।** वेयर हाउसिंग एण्ड लाजिस्टिक कार्पोरेशन के शाखा प्रबंधक एवं कनिष्ठ सहायक भेड़रहा रीवा एस.एल. वर्मा और कनिष्ठ सहायक तथा शाखा क्योटी केप रीवा के प्रभारी अरूण कुमार मिश्रा को पदीय दायित्वों के निर्वहन में लापरवाही बरतने पर तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। निलंबन अवधि में श्री श्री मिश्रा और श्री वर्मा को क्षेत्रीय कार्यालय जबलपुर संलग्न किया गया है। उन्हें नियमानुसार जीवन निर्वाह भत्ते का भुगतान किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने अनियमिता की शिकायत प्राप्त होने पर समिति गठित कर जांच करने और दोषी अधिकारी-कर्मचारी के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई के निर्देश दिये थे।

मध्यप्रदेश वेयर हाउसिंग एण्ड लाजिस्टिक कार्पोरेशन के प्रबंध संचालक सिबि चक्रवर्ती ने जानकारी दी है कि शाखा प्रबंधक भेड़रहा रीवा एवं क्योटी केप रीवा द्वारा मिलिंग नीति के अंतर्गत स्कंध जमा/ भुगतान के लिये निर्धारित ऑनलाइन प्रक्रिया का पालन नहीं करते हुए जारी दिशा निर्देशों के विपरीत आफलाईन चावल जमा की कार्रवाई की गई जो नियम विरूद्ध था। श्री वर्मा और श्री मिश्रा का यह कृत्य स्वेच्छाचरिता और अनुशासनहीनता को प्रदर्शित करता है तथा कदाचरण की श्रेणी में आता है।गौरतलब है कि इसके पहले भी शासकीय कार्यों के प्रति लापरवाही पर स्टेट सिविल सप्लाइज कार्पोरेशन के जिला कार्यालय रीवा के 2 कनिष्ठ सहायकों निलंबित किया जा चुका है। प्रदेश के खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा कि विभाग में किसी भी प्रकार का भ्रष्ट्राचार और मनमानी बर्दाश्त नहीं की जायेगी। लापरवाही बरतने कर मनमानी करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों पर तत्समय करवाई की जायेगी। मंत्री श्री सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश की जनता के लिए चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे इसका विशेष रूप से ध्यान रखा जा रहा है ।

# स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत और विकसित भारत के निर्माण के लिये आगे बढ़ें : राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु

**भोपाल (एजेंसी)।** राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने कहा है कि स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत और विकसित भारत के निर्माण के लिये सभी आगे बढ़ें। स्वच्छता ही देश को स्वस्थ और विकसित बना सकती है। देश का प्रत्येक व्यक्ति इस कार्य में सहयोग करे और सब मिलकर देश को विकसित राष्ट्र बनायें। मध्यप्रदेश ने शहरी और ग्रामीण स्वच्छता के क्षेत्र में अग्रणी स्थान प्राप्त किया है। मध्यप्रदेश के कई शहरों को सफाई के लिये श्रेष्ठ शहर घोषित किया गया है। इन्दौर निरन्तर 7वीं बार देश का स्वच्छतम शहर घोषित हुआ है। भोपाल स्वच्छतम राजधानी बनी है। राष्ट्रपति ने स्वच्छता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और उनकी पूरी टीम को बधाई और शुभकामनाएं दी। राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु आज उज्जैन में सफाई मित्रों के सम्मान समारोह को सम्बोधित कर रही थीं। उन्होंने सफाई मित्रों श्रीमती रश्मि टांकले, श्रीमती

किरण खोड़े, श्रीमती शोभा घावरी, श्रीमती अनिता चावरे और श्री गोपाल खरे का सम्मान भी किया। राष्ट्रपति ने 1692 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले उज्जैन-इन्दौर सिक्स-लेन मार्ग का भूमि-पूजन भी किया। प्रारम्भ में राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु का राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पुष्पगुच्छ भेंटकर स्वागत किया और उन्हें श्रीमहाकाल लोक की प्रतिकृति प्रदान की।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा, प्रभारी मंत्री श्री गौतम टेटवाल, नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह, जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट और नगरीय विकास एवं आवास राज्य मंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी भी उपस्थित थे। राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु ने कहा कि अवन्तिका बाबा महाकाल की पवित्र, दिव्य एवं पावन नगरी है।

## बिहार में दबंगों ने दलितों के 80 घर जलाए

**नवादा (एजेंसी)।** बिहार के नवादा में दलित बस्ती में दबंगों ने बुधवार रात 8 बजे 80 घरों में आग लगा दी। आरोपियों ने फायरिंग भी की। लोगों के साथ मारपीट भी हुई। इसके बाद यहां तनाव बना हुआ है। गांव में हालात पर काबू पाने के लिए 5 थानों की पुलिस तैनात की गई है। मुख्य आरोपी नंदू पासवान समेत 15 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इस घटना की वजह जमीन विवाद बताया जा रहा है। मामला नवादा जिले के मुफस्सिल थाना क्षेत्र के ददौर स्थित कृष्णा नगर दलित बस्ती का है। कई मवेशी भी जल गए। मौके पर दमकल विभाग की गाड़ियां पहुंचीं। कड़ी मशक्कत कर आग पर काबू पाया गया। हालांकि तब तक घर में रखे सामान जलकर राख हो गए। घर फूस और खपरैल के थे। घटना की वजह भूमि विवाद है। गांव के एक बड़े भूखंड पर दलित परिवार रहते हैं। इसी भूखंड को लेकर दूसरे पक्ष से विवाद चल रहा है। इसकी सुनवाई कोर्ट में हो रही है। पीड़ित परिवारों का आरोप है कि बुधवार की देर शाम अचानक दबंगों ने हमला कर दिया। मारपीट की। घरों में आग लगा दी। फायरिंग भी की। पीड़ित लक्ष्मीनिया देवी ने बताया कि हम लोग की बस्ती सरकारी जमीन पर है। नंदू पासवान इसे कब्जा करना चाहता है। वो अपने साथियों के साथ आया और इस घटना को अंजाम दिया। बहुत नुकसान हुआ है। वहीं भीम आर्मी के नेता विशाल चौधरी ने बताया कि बुधवार की शाम दबंगों ने 100 राउंड से ज्यादा फायरिंग की। उसके बाद घरों पर पेट्रोल डालकर उसमें आग लगा दी गई। 2 किमी दूर यहां से थाना है, उसके बाद भी ऐसी घटना को अंजाम दिया गया। आरोपियों को मंशा है कि इन्हें भगा कर जमीन पर कब्जा कर लिया जाएगा। गांववालों का आरोप है कि %प्राण बिगहा के नंदू पासवान सहित सैकड़ों लोगों ने एक साथ बुधवार की शाम करीब 8 बजे गांव पर हमला कर दिया। इसके साथ ही ताबड़तोड़ गोलियां बरसाना भी शुरू कर दी। इस बीच कई ग्रामीणों के साथ मारपीट भी की गई। इसके बाद 80-85 घरों में आग लगा दी।

# राहुल को आतंकी कहने पर केंद्रीय मंत्री बिट्टू पर एफआईआर

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** राहुल गांधी के खिलाफ विवादित टिप्पणी करने पर केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेटी के एक पदाधिकारी ने इसकी शिकायत की थी। बिट्टू पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 353(2) (झूठी जानकारी या अफवाह फैलाना), 192 (दंगा भड़काने की कोशिश) और 196 (धर्म और जाति के आधार पर नफरत फैलाना) के तहत केस दर्ज किया गया है। इसके बाद केंद्रीय मंत्री ने कहा कि मैं अपने बयान पर माफी नहीं मागूंगा, बल्कि संसद में भी बोलूंगा कि गांधी परिवार ने पंजाब जलाया। हमने पंजाब में अपनी कई पीढ़ियां खोई हैं। दरअसल, बिट्टू ने 15 सितंबर को कहा था कि राहुल गांधी देश के नंबर-1 आतंकवादी हैं। उनको पकड़ने

वाले को इनाम दिया जाना चाहिए, क्योंकि वे देश के सबसे बड़े दुश्मन हैं। नड्डा का खड़गे को जवाब, कहा- राहुल की करतूतें न भूलें भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने 18 सितंबर को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के नाम ओपन लेटर लिखा। नड्डा ने लिखा कि आप राहुल गांधी समेत अपने नेताओं की करतूतों को भूल गए हैं या फिर उन्हें जानबूझ कर नजरअंदाज किया। यह उस चिट्ठी का जवाब है, जो खड़गे ने 17 सितंबर को पीएम मोदी के नाम लिखी थी। जिसमें उन्होंने राहुल गांधी को लेकर विवादित बयान देने वाले भाजपा नेताओं के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। नड्डा ने कहा- किस मजबूरी के चलते राहुल को सही बता रहे भाजपा अध्यक्ष ने अपनी चिट्ठी में खड़गे से पूछा कि जिस व्यक्ति का इतिहास ही देश के प्रधानमंत्री समेत पूरे ओबीसी समुदाय को चोर कहकर गाली देने का रहा हो, जिसकी मानसिकता पूरा देश जानता हो, उस राहुल गांधी को सही ठहराने की कोशिश आप किस मजबूरी के चलते कर रहे हैं? नड्डा ने लेटर में यह भी लिखा कि कांग्रेस के नेताओं ने पिछले 10 सालों में प्रधानमंत्री मोदी को 110 से ज्यादा गालियां दी हैं। तब राजनीतिक शुचिता, मर्यादा, अनुशासन, शिष्टाचार जैसे शब्द आपकी डिक्शनरी से क्यों गायब हो जाते हैं?

# कोलकाता रेप-मर्डर केस, डॉक्टरों का हड़ताल खत्म करने से इनकार

**कोलकाता (एजेंसी)।** कोलकाता में ट्रेनी डॉक्टर के रेप-मर्डर केस को लेकर प्रदर्शन कर रहे जूनियर डॉक्टरों और बंगाल सरकार के बीच बुधवार को दूसरे दौर की बातचीत हुई। डॉक्टरों ने अपनी मांगों को लेकर बंगाल के चीफ सेक्रेटरी मनोज पंत के साथ ढाई घंटे बैठक की, लेकिन इसका कोई नतीजा नहीं निकला। डॉक्टरों ने कहा कि वे सरकार से हुई बातचीत से असंतुष्ट हैं और अपनी हड़ताल जारी रखेंगे। डॉक्टरों ने यह आरोप लगाया कि बैठक में डॉक्टरों राज्य सरकार ने बैठक की लिखित कार्यवाही (मिनट्स ऑफ मीटिंग) मांगे थे, जिसे देने से सरकार ने इनकार कर दिया।

इस बीच पश्चिम बंगाल मेडिकल काउंसिल ने आरजी कर अस्पताल के पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष का पंजीकरण रद्द कर दिया है। संदीप से पहले

स्पष्टीकरण मांगा गया था, लेकिन 13 दिन से ज्यादा निकलने के बाद भी कोई स्पष्टीकरण न मिलने पर कार्उंसिल ने यह कदम उठाया। उधर, नए कमिश्नर मनोज वर्मा, गुरुवार को आरजी कर कॉलेज और हॉस्पिटल का दौरा करने पहुंचे। इसी घटना के विरोध में टीएमसी से राज्यसभा सांसद जवाहर सरकार ने संसद सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। इससे पहले 16 सितंबर को जूनियर डॉक्टर और ममता के बीच मीटिंग हुई थी। इसमें ममता ने डॉक्टरों की 5 में से 3 मांगें मान ली थीं।

## 17 घंटे बाद गड्ढे से बाहर आई मासूम नीरू

**बांदीकुई (एजेंसी)।** दौसा के बांदीकुई में बोरवेल के पास हुए गड्ढे में करीब 17 घंटे फंसी रही 2 साल की मासूम को एनडीआरएफ ने सुरंग खोदकर बचा लिया है। बुधवार शाम 5 बजे गड्ढे में गिरी बच्ची को गुरुवार सुबह करीब 10.10 बजे सुरक्षित बाहर निकाला गया। बच्ची को बचाने के लिए एनडीआरएफ की टीमों ने लगातार 12 घंटे तक खुदाई की थी। इसके बाद आज सुबह एक पाइप के जरिए एनडीआरएफ की टीम बच्ची तक पहुंची थी। नीरू गुर्जर (2) को जैसे ही बाहर निकाला पूरा एरिया वंदे मातरम के नारों से गूंज उठा। मासूम को बांदीकुई हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है। उसकी हालत फिलहाल ठीक बताई जा रही है। हादसा बुधवार शाम करीब 5 बजे जोधपुरिया गांव में हुआ था। यहां खेत में खेलते हुए नीरू करीब 35 फीट गहरे गड्ढे में गिर गहरा बोरवेल भी था। रात 2 बजे तक एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की टीम ने गड्ढे से बच्ची को बाहर निकालने के लिए देसी जुगाड़ एंगल सिस्टम का उपयोग किया

## राजस्थान-मध्य प्रदेश में अगले 4 दिन बारिश नहीं, हिमाचल में बर्फबारी, पहाड़ों पर ठंड

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** मौसम विभाग ने आज देश के किसी भी राज्य में तेज बारिश का अलर्ट जारी नहीं किया है। राजस्थान में भी अगले चार दिन बारिश नहीं होगी। प्रदेश में इस मानसून सीजन अब तक 59 फीसदी से ज्यादा बारिश दर्ज की गई है। मध्यप्रदेश में बुधवार को ग्वालियर, इंदौर समेत 12 जिलों में बारिश हुई। हालांकि आज एमपी में भी बारिश की संभावना नहीं है। यहां अगले चार दिन सिर्फ बादल छाए रहेंगे। उधर बिहार में गंगा नदी के खतरे के निशान के ऊपर बहने से 76 सरकारी स्कूल अगले 3 दिन तक बंद रहेंगे। वहीं हिमाचल प्रदेश में बीते तीन-चार दिनों में हुई बारिश और बर्फबारी से लाहौल-स्पीति और किन्नौर के तापमान में भारी गिरावट आई है। पहाड़ों पर ठंड होने लगी है। हिमाचल प्रदेश में 50 सड़कें बंद हिमाचल प्रदेश में बारिश के कारण बुधवार को 50 सड़कें बंद रहीं। राज्य के कुछ हिस्सों में मीडियम बारिश हुई। 1 जून से 17 सितंबर तक चल रहे मानसून सीजन के दौरान बारिश में 18 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई। राज्य में 18 सितंबर तक औसत 698.3 द्वद्व बारिश के मुकाबले 569.3 द्वद्व बारिश हुई। इस दौरान बारिश से जुड़ी घटनाओं में 172 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 30 लोग अभी भी लापता हैं। पश्चिम बंगाल के कई जिलों में बाढ़ पश्चिम बंगाल के कई दक्षिणी जिलों में बाढ़ की स्थिति है।

# आतिशी के साथ नई कैबिनेट की शपथ 21 सितंबर को

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** दिल्ली की मुख्यमंत्री चुनी गई आतिशी 21 सितंबर को पद की शपथ लेंगी। आतिशी अपनी कैबिनेट के साथ शपथ लेंगी। कैबिनेट में मुकेश अहलावत नया चेहरा होंगे। आप ने बताया कि मुकेश सामाजिक न्याय मंत्री राजकुमार आनंद की जगह लेंगे। अहलावत दिल्ली की सुल्तानपुर माजरा सीट से विधायक हैं। वे आम आदमी पार्टी का दलित चेहरा हैं। दिल्ली सरकार की कैबिनेट में मुख्यमंत्री समेत सात सदस्य हैं। नए मुख्यमंत्री और नए सदस्यों का कार्यकाल

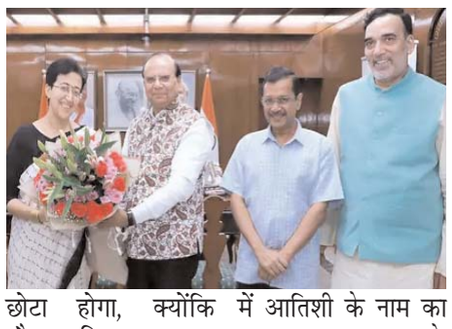

छोटा होगा, क्योंकि मौजूदा विधानसभा का कार्यकाल फरवरी 2025 तक है। कैबिनेट में गोपाल राय, कैलाश गहलोत, सौरभ भारद्वाज और इमरान हुसैन मंत्री पद पर बरकरार रहेंगे। सातवें सदस्य के नाम की घोषणा अभी नहीं की गई है। अरविंद केजरीवाल ने 17 सितंबर को विधायक दल की बैठक में आतिशी के नाम का प्रस्ताव रखा था। इसके बाद उन्हें मुख्यमंत्री चुना गया। इसी दिन केजरीवाल ने अपना इस्तीफा दिया था। कैबिनेट में अभी 6 मंत्री, एक के नाम का ऐलान बाकी आतिशी के पास इस समय वित्त, राजस्व, पीडब्ल्यूडी और शिक्षा समेत 13 प्रमुख विभाग हैं।

# वक्फ बिल पर जेपीसी की चौथी बैठक

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** वक्फ बिल में संशोधन के लिए गुरुवार (19 सितंबर) को जॉइंट पार्लियामेंट्री कमेटी की चौथी बैठक जारी है। बैठक सुबह 11 बजे शुरू हुई। पिछले 28 दिनों में जेपीसी की तीन बैठकें हो चुकी हैं। जिसमें चर्चा के दौरान काफी हंगामा भी हुआ। दरअसल, संसदीय कार्य और अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरेन रिजिजू ने 8 अगस्त को लोकसभा में वक्फ बिल 2024 पेश किया था। कांग्रेस और समाजवादी पार्टी समेत विपक्षी दलों ने इस बिल को मुस्लिम विरोधी बताया था। विपक्ष के विरोध के बीच ये बिल लोकसभा में बिना किसी चर्चा के जेपीसी को भेज दिया गया था। जेपीसी में लोकसभा से 21 सदस्य- भाजपा के 7, कांग्रेस के 3 सांसद 1. जगदंबिका पाल (भाजपा) 2. निशिकांत दुबे (भाजपा) 3. तेजस्वी सूर्या (भाजपा) 4. अपराजिता सारंगी (भाजपा) 5. संजय जायसवाल (भाजपा) 6. दिलीप सैकिया (भाजपा) 7. अभिजीत गंगोपाध्याय (भाजपा) 8. श्रीमती डीके अरुणा 9. गौरव गोगोई (कांग्रेस) 10. इमरान मसूद (कांग्रेस) 11. मोहम्मद जावेद (कांग्रेस) 12. मौलाना मोहिबुल्ला (सपा) 13. कल्याण बनर्जी 14. ए राजा 15. एलएस देवरायलु 16. दिनेश्वर कामत 17. अरविंत सावंत (शिवसेना, उद्धव गुट) 18. सुरेश गोपीनाथ (एनसीपी शरद पवार) 19. नरेश गणपत म्हास्के (शिवसेना, शिंदे गुट) 20. अरुण भारती 21. असदुद्दीन ओवैसी जेपीसी में राज्यसभा से 10 सदस्य- भाजपा के 4, कांग्रेस का एक सांसद 1. बृज लाल (भाजपा) 2. डॉ. मेधा विश्राम कुलकर्णी (भाजपा) 3. गुलाम अली (भाजपा) 4. डॉ. राधा मोहन दास अग्रवाल (भाजपा) 5. सैयद नसीर हुसैन (कांग्रेस) 6. मोहम्मद नदीम उल हक 7. वी विजयसाई रेड्डी 8. एम मोहम्मद अब्दुल्ला 9. संजय सिंह 10. डॉ. धर्मस्थल वीरेंद्र हेगड़े (राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत) 5 सितंबर, तीसरी बैठक- वक्फ बिल का प्रेजेंटेशन दिया गया वक्फ बिल में संशोधन के लिए जॉइंट पार्लियामेंट्री कमेटी की तीसरी बैठक में मंत्रालयों के अधिकारियों ने कमेटी को वक्फ बिल के बारे में प्रेजेंटेशन दिया।

विपक्षी सांसदों ने आरोप लगाया कि प्रेजेंटेशन के दौरान सरकारी अधिकारी कमेटी को बिल के बारे में पूरी जानकारी नहीं दे रहे। साथ ही कहा कि मिनिस्ट्री के अधिकारी अपना स्वतंत्र दृष्टिकोण नहीं अपना रहे। वे बिना किसी विचार-विमर्श के सरकार के रुख को ही बढ़ावा दे रहे हैं।

# महाराष्ट्र में गणेश विसर्जन शोभायात्रा के दौरान छत गिरी

**मुंबई (एजेंसी)।** महाराष्ट्र के भंडारा जिले में बुधवार 18 सितंबर को गणपति विसर्जन शोभायात्रा के दौरान छत गिरने से 30 से 40 महिलाएं घायल हो गई हैं। गणेश विसर्जन शोभायात्रा देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग छत पर किनारे खड़े थे। तभी अचानक छज्जा गिर गया। घटना का वीडियो सामने आया है। इसमें देखा जा सकता है कि सड़क पर शोभायात्रा निकल रही है। महिलाएं पारंपरिक ड्रेस पहने डांस कर रही थीं। इन्हें देखने के लिए काफी संख्या में लोग अपनी छतों पर आ गए। जो छत गिरी है, उसके नीचे भी कई महिलाएं खड़ी थीं। सभी को हल्की चोट लगी है। भिवंड़ी में जूलूस पर पथराव, मूर्ति खंडित का आरोप, पुलिस का लाठीचार्ज महाराष्ट्र के भिवंडी इलाके में 17 सिंतबर को गणेश विसर्जन के दौरान रैली पर कुछ लोगों ने पथराव किया था। इससे विसर्जन के लिए जा रही मूर्ति खंडित हो गई थी। पत्थरबाजी की खबर लगते ही लोग घटनास्थल पर पहुंचे और नारेबाजी करने लगे। एक गुट ने कहा कि जब तक पत्थरबाजों को गिरफ्तार नहीं किया जाता तब तक विसर्जन नहीं होगा। दोनों गुटों में हाथापाई होने लगी, जिसके बाद पुलिस ने लाठीचार्ज किया। लाठीचार्ज में कई लोग घायल हुए हैं। पुलिस सूत्रों के मुताबिक- एक युवक को भीड़ ने पकड़ लिया और उसकी पिटाई कर पुलिस के हवाले कर दिया। युवक पर मूर्ति खंडित करने का आरोप है। अकोला में भी गणेश विसर्जन यात्रा पर पथराव, 68 लोग हिरासत में महाराष्ट्र के अकोला जिले में मंगलवार 17 सिंतबर को गणेश विसर्जन के दौरान रैली पर कुछ लोगों ने पथराव किया। मौके पर पहुंची पुलिस ने स्थिति को नियंत्रण में लिया। वहीं 68 लोगों को हिरासत में लिया। अनमोल मित्तल ने बताया कि नंदीपेठ इलाके से गुजर रही गणेश शोभायात्रा पर दूसरे समुदाय ने 5 मिनट तक पथराव किया। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए मामले को शांत कराया और फिर से शोभायात्रा शुरू करवाई। गणपति विसर्जन के बाद बुधवार सुबह पांडाल में जानवर के अंग मिलने के बाद लोगों का गुस्सा फूट पड़ा। बाजार बंद करवाकर लोग धरने पर बैठ गए। मौके पर हनुमान चालीसा का पाठ भी किया। माहौल गरमाता देख बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया है।

# भाजपा के हरियाणा चुनाव संकल्प पत्र में 20 वादे

**रोहतक (एजेंसी)।** भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने गुरुवार को हरियाणा चुनाव के लिए पार्टी का संकल्प पत्र जारी किया। संकल्प पत्र में अग्निवीर को सरकारी नौकरी की गारंटी दी गई है। महिलाओं को हर महीने 2100 रुपए देने का वादा किया है। यह राशि कांग्रेस के कल जारी घोषणा पत्र से 100 रुपए ज्यादा है। इसमें 500 रुपए में गैस सिलेंडर देने जैसी 20 बातें हैं। रोहतक में संकल्प पत्र जारी करते हुए नड्डा ने कहा कि अस्पतालों में डायलिसिस फ्री होगा और चिरायु आयुष्मान योजना में 10 लाख तक इलाज मुफ्त हो सकेगा। नड्डा ने कहा कि भाजपा ने 20 संकल्प रखे हैं। हरियाणा के विकास को नॉन स्टॉप रखने के लिए सिग्नल

आपको डाउन करना है। वह किसका करना है, ये आपको तय करना है। इस प्रोग्राम में केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर, प्रदेश प्रभारी सतीश पूनिया, हरियाणा चुनाव प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान के अलावा बड़े नेता मौजूद थे। जेपी नड्डा ने कहा हरियाणा की छवि 10 साल पहले क्या थी?। पहले हरियाणा में नौकरी के लिए पर्ची-खर्ची चलती थी। नौकरी के कारण लोगों को सजाएं तक हुईं। हरियाणा जमीनों के घोटाले के लिए जाना जाता था। उनका रियल मेनिफेस्टो ये था कि जमीन का घोटाला, किसानों की जमीन को हड़पना, उनकी जमीन की श्रेणी को बदलना। मेनिफेस्टो को विरोधियों ने डायल्यूटेड बना दिया। भाजपा के लिए संकल्प पत्र सीरियस डॉक्यूमेंट है। हम जो कहते हैं, वही करते हैं। इससे आपको साफ दिखेगा कि हरियाणा बदला है। हरियाणा का एक्सपोर्ट दस साल में 68 हजार करोड़ से बढ़कर ढाई लाख करोड़ से ज्यादा का हो चुका है। पहले 7 मेडिकल कॉलेज होते थे, जो आज 15 हो चुके हैं। पहले मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की 700 सीटें थी, जो आज 2 हजार से ज्यादा हैं।

10 साल पहले 500 गांवों में बिजली थी, आज 5800 गांवों में बिजली पहुंच चुकी है। यहां किसान की चर्चा बहुत होती है। कांग्रेस में ऐसे-ऐसे नेता हैं, जो किसानों की बात करते हैं, लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूं कि पहले किसानों को मुआवजे में 1-2 रुपए के चेक मिलते थे।

## मैदान पर लिटन दास और ऋषभ पंत के बीच हुई कहासुनी

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** चेन्नई के चेपॉक स्टेडियम में भारत और बांग्लादेश के बीच पहला टेस्ट मैच खेला जा रहा है। इस मैच में बांग्लादेश टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया जबकि टीम इंडिया को बल्लेबाजी के लिए उतरना पड़ा।

भारतीय टीम की शुरुआत बेहद खराब रही। जहां उसे शुरुआत में ही तीन झटके लग गए। इसके बाद ऋषभ पंत और यशस्वी जायसवाल ने टीम को संभाला। लेकिन पंत भी जायसवाल का साथ ज्याद देर तक नहीं दे पाए और हसन महमूद की गेंद पर आउट हो गए। वहीं इस दौरान ऋषभ पंत और बांग्लादेश के विकेटकीपर बल्लेबाज लिटन दास के बीच कुछ कहासुनी देखने को मिली। दरअसल, रन पूरा करने के चक्कर में पंत थोड़ा सा स्टंप के सामने आ गए थे, जिसके चलते फील्डर का थ्रो उनकी टांग पर लग गया। इसके बाद भारत को ओवर थ्रो का रन मिल गया। लिटन के ये बात अच्छी नहीं लगी तो वह इसको लेकर पंत से कुछ कहने लगे लेकिन पंत भी कहां चुप रहने वाले थे उन्होंने इसका बेहतरीन जवाब भी दिया। जब लिटन ने पंत से कुछ कहा कि, पंत ने कहा उसको देख कहां मार रहा है? लिटन ने फिर पंत को आड़े हाथों लेने की कोशिश की और कहा कि, पैर पर लगा ना, वो तो मारेगा ही... पंत ने फिर जवाब देते हुए कहा कि, मारले मैं भी दो भागूंगा। इस दौरान पंत ने जायसवाल के साथ भारत का स्कोर 96 रन तक पहुंचाया।

## आईसीसी ने जारी की टी20 रैंकिंग

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** आईसीसी ने बुधवार को टी20 खिलाड़ियों की रैंकिंट जारी की। इंग्लैंड के हरफनमौला खिलाड़ी लियाम लिविंगस्टोन ने अपने शानदार प्रदर्शन की बदौलत रैंकिंग में लंबी छलांग लगाई और नंबर वन ऑलराउंडर बन गए हैं। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हाल ही में समाप्त तीन मैचों की टी20 सीरीज में लियाम ने बैट और गेंद दोनों से बेहतरीन प्रदर्शन किया। उन्होंने दो मैचों में 124 रन और 5 विकेट अपने नाम किए। लियाम ने 47 गेंद में 87 रन की शानदार पारी खेली, इस दौरान उन्होंने 6 चौके और पांच छक्के भी जड़े। उनकी इस पारी की बदौलत इंग्लैंड ने दूसरे टी20 मैच में 194 रनों के लक्ष्य का पीछा कर लिया था। दो मैचों में कमाल का प्रदर्शन कर लियाम ने सात पायदान की बड़ी छलांग लगाई और नंबर वन ऑलराउंडर बन गए हैं। इस दौरान उन्होंने मार्कस स्टोयिस को पीछे छोड़ा है। मार्कस को दो स्थान का नुकसान हुआ है। वहीं टॉप-10 में हार्दिक पंड्या एकलौते भारतीय खिलाड़ी हैं। हार्दिक 199 अंक के साथ सातवें नंबर पर हैं। जबकि अक्षर पटेल 149 अंक के साथ 11वें स्थान पर हैं। ऑस्ट्रेलिया के बल्लेबाज जोस इंग्लिश ने बल्लेबाजों की रैंकिंग में टॉप-10 में जगह बना ली है। उन्होंने 13 स्थान की छलांग लगाई है और 10वें नंबर पर पहुंच गए हैं। जबकि ट्रेविस हेड टॉप पर बरकरार हैं। जबकि भारत के कप्तान सूर्यकुमार यादव दूसरे स्थान पर हैं।

# बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी को लेकर मोहम्मद शमी ने ऑस्ट्रेलिया को दी चेतावनी

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** इसी साल नवंबर में भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी खेली जाएगी। इस बार इस ट्रॉफी की मेजबानी ऑस्ट्रेलिया के हाथों में होगी। वहीं पिछली चार सीरीज में भारत अजेय रहा है। इनमें से दो सीरीज भारत ने ऑस्ट्रेलिया के घर में जीती है। हर बार टीम 2-1 के अंतर से टेस्ट सीरीज को जीतने में सफल हुई है, लेकिन इस बार पांच मैचों की सीरीज है। जिसे लेकर बयानबाजी शुरू हो गई है। वहीं इसी कड़ी में भारतीय दिग्गज गेंदबाज मोहम्मद शमी ने ऑस्ट्रेलिया टीम को चेतावनी दी है। शमी इस सीरीज के लिए बेहद उत्साहित हैं, जिसे लेकर उन्होंने तैयारी शुरू कर दी है। मोहम्मद शमी ने पीटीआई से बात करते हुए कहा कि, हम फेवरिट हैं, उन्हें चिंतित होना चाहिए। भारत का लगातार चार बार बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी जीतना अपने आप में एक रिकॉर्ड है, इससे पहले किसी भी देश ने लगातार दो से ज्यादा बार जीत हासिल नहीं की है। हालांकि, शमी का मानना है कि टीम इंडिया लगातार पांचवीं बार टेस्ट सीरीज जीतने की प्रबल दावेदार है। ऑस्ट्रेलियाई दिग्गज भी मानते हैं कि, ऑस्ट्रेलिया पर दबाव होगा। क्योंकि वे पिछले करीब 10 साल से टेस्ट सीरीज भारत के खिलाफ नहीं जीते हैं। हालांकि, वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप का फाइनल ऑस्ट्रेलिया ने ही जीता था। हाल ही में बंगला क्रिकेट संघ यानी सीएबी के वार्षिक पुरस्कार समारोह में मोहम्मद शमी ने अपनी वापसी को लेकर बात की थी। उन्होंने कहा था, कि मैं जल्द ही वापसी करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा हूं। क्योंकि मुझे पता है कि मैं काफी समय से खेल से बाहर हूं। मैं ये सुनिश्चित करना चाहता हूं कि जब मैं वापस आऊं तो मुझे कोई असुविधा ना हो। मुझे अपनी फिटनेस पर काम करना होगा, ताकि कोई असुविधा ना हो। वर्ल्ड कप 2023 के फाइनल के बाद से ही मोहम्मद शमी बाहर हैं और वे आने वाले समय में वापसी कर सकते हैं। उनको घरेलू क्रिकेट खेलकर अपनी फिटनेश साबित करनी पड़ सकती है।

## ऋषभ पंत के नाम हुए एक बड़ा रिकॉर्ड

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** 19 सितंबर को चेन्नई के मैदान पर बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट मैच में ऋषभ पंत 39 रन की पारी खेलकर आउट हो गए। लेकिन इस दौरान उन्होंने एक बड़ी उपलब्धि अपने नाम कर ली। पंत भारत के लिए दूसरे ऐसे विकेटकीपर बल्लेबाज बन गए हैं जिन्होंने इंटरनेशनल क्रिकेट में 4000 से ज्यादा रन बनाने का कीर्तिमान स्थापित किया है। इस लिस्ट में कई और खिलाड़ी भी हैं, लेकिन उनसे ज्यादा रन एक ही विकेटकीपर ने भारत के लिए बनाए हैं। वो एमएस धोनी हैं।

## पंजाब किंग्स के मुख्य कोच बने रिकी पोंटिंग , चार साल के लिए टीम ने किया अनुबंध

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** ऑस्ट्रेलिया के पूर्व महान बल्लेबाज और कप्तान रिकी पोंटिंग को पंजाब किंग्स का मुख्य कोच नियुक्त किया गया है। वह इस आईपीएल टीम में अपने हमवतन ट्रेवर बेलिस की जगह लेंगे। पोंटिंग सात साल तक दिल्ली कैपिटल्स का हिस्सा रहने के बाद पंजाब किंग्स से जुड़े हैं। आईपीएल के एक सूत्र ने पीटीआई को बताया, ''पोंटिंग ने कल अनुबंध पर हस्ताक्षर किए और यह चार साल का है। उसे टीम तैयार करने के लिए इतने समय की जरूरत पड़ेगी। बाकी के सहयोगी स्टाफ को लेकर फैसला पोंटिंग करेंगे।'' पोंटिंग के मार्गदर्शन में दिल्ली कैपिटल्स ने प्रभावी प्रदर्शन किया था लेकिन आईपीएल खिताब नहीं जीत पाई। टीम इस दौरान 2020 में फाइनल में भी पहुंची। वह इससे पहले मुंबई इंडियन्स के भी कोच रह चुके हैं। पंजाब की टीम भी 2008 में लीग की शुरुआत से आईपीएल खिताब नहीं जीत पाई है और टीम के चार सह मालिकों को उम्मीद होगी कि पोंटिंग इस कमी को पूरा करेंगे। पंजाब की टीम 2014 में फाइनल में पहुंची थी और उसे टीम में लगातार बदलाव करने के लिए आलोचनाओं का सामना करना पड़ता रहा है। टीम पिछले सात सत्र में शीर्ष पांच में भी जगह बनाने में नाकाम रही है और इस साल हुए पिछले सत्र में 10 टीमों के बीच नौवें स्थान पर रही। बेलिस पिछले दो सत्र में टीम के कोच रहे जबकि अब संन्यास ले चुके शिखर धवन ने कप्तान की भूमिका निभाई। संजय बांगड़ टीम के क्रिकेट विकास प्रमुख थे जबकि तेज गेंदबाजी और स्पिन कोच की भूमिका क्रमशः चार्ल्स लेंगवेल्ट और सुनील जोशी निभा रहे थे।

## हमारे बल्लेबाज किसी भी तरह के स्पिन आक्रमण का सामना करने में सक्षम:गंभीर

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** भारत के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने भारतीय बल्लेबाजों के अच्छे स्पिन आक्रमण के सामने हाल के संघर्ष को दरकिनार करते हुए मंगलवार को यहां कहा कि उनके बल्लेबाज दुनिया के किसी भी तरह के आक्रमण का सामना करने में पूरी तरह से सक्षम हैं। गंभीर ने बांग्लादेश के खिलाफ दो टेस्ट मैच की श्रृंखला की पूर्व संध्या पर संवाददाताओं से कहा कि जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद शमी, रविचंद्रन अश्विन और रविंद्र जडेजा की गेंदबाजी चौकड़ी ने भारत की बल्लेबाजी को तवज्जो देने की प्रवृत्ति को बदल दिया। गंभीर से जब पूछा गया कि श्रीलंका के खिलाफ पिछले महीने सीमित ओवरों की सीरीज विशेषकर वनडे में भारतीय बल्लेबाज स्पिनरों के सामने जूझते हुए नजर आए तो उन्होंने कहा,''हमारी बल्लेबाजी इकाई में इतनी गुणवत्ता है कि वह किसी भी तरह के आक्रमण का सामना कर सकती है। टेस्ट और वनडे में काफी अंतर होता है।'' गंभीर ने अपने गेंदबाजों की भी प्रशंसा की। उन्होंने कहा,'' भारत एक समय बल्लेबाजी को तवज्जो देता था लेकिन बुमराह, शमी, अश्विन और जडेजा ने इसे गेंदबाजों का खेल बना दिया।''

## शुभमन गिल के नाम हुआ अनचाहा रिकॉर्ड

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** चेन्नई के चेपॉक स्टेडियम में भारत और बांग्लादेश के बीच पहला टेस्ट मैच खेला जा रहा है। इस मैच में बांग्लादेश टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। वहीं शुरुआत में ही भारत को तीन झटके लगे। इसी में शुभमन गिल बिना खोले पवेलियन लौट गए। उनके साथ ही उनके नाम एक अनचाहा रिकॉर्ड भी दर्ज हो गया। बांग्लादेश के खिलाफ पहली पारी में शुभमन गिल लय में नहीं दिखे और आठ गेंद खेलकर बिना खाता खोले पवेलियन लौटे। बांग्लादेश के गेंदबाज एक रणनीति के तहत गेंदबाज कर रहे थे और गिल को लेग साइड पर मारने के लिए मजबूत कर रहे थे और आखिर में उन्हें इसका फल मिला। 8वें ओवर की तीसरी गेंद पर हसन महमूद ने एक बार फिर गिल की लेग साइड पर गेंद की और उनको शॉट खेलने के लिए मजबूर किया और गेंद बैट का किनारा लेकर लिटन के पास गई। गिल इस साल तीसरी बार घरेलू मैदान पर जीरो पर आउट हुए हैं। इसके साथ ही गिल एक कैलेंजर वर्ष में 3 या उससे ज्यादा शून्य पर आउट होने वाले छठे भारतीय बल्लेबाज बन गए। मोहिंदर अमरनाथ एक कैलेंडर ईयर में सबसे ज्यादा बार जीरो पर आउट होने वाले भारतीय बल्लेबाज हैं। 1993 में वह पांच पर खाता नहीं खोल सके थे। कोहली का नाम भी इस लिस्ट में शामिल है। 2021 में कोहली तीन बार बिना खाता खोले आउट हुए थे।

# परिणाम के बारे में नहीं सोच रहा हूं, केवल प्रक्रिया का अनुसरण करना चाहता हूं-शंटो

**चेन्नई (एजेंसी)।** बांग्लादेश के कप्तान नजमुल हसन शंटो नहीं चाहते हैं कि उनकी टीम पाकिस्तान के खिलाफ श्रृंखला में जीत के खुमार में डूबी रहे। वह चाहते हैं कि इसके बजाय टीम गुरुवार से यहां शुरू होने वाली दो टेस्ट मैच की श्रृंखला में भारत की मजबूत टीम का सामना करने पर ध्यान दे। बांग्लादेश की टीम पाकिस्तान के खिलाफ उसकी धरती पर दो टेस्ट मैच की श्रृंखला में 2-0 से जीत दर्ज करके यहां पहुंची है। शंटो ने बुधवार को यहां मैच की पूर्व संध्या पर पर पत्रकारों से कहा,''मेरा मानना है कि हमने पाकिस्तान में बहुत अच्छी क्रिकेट खेली जिससे हमारा काफी मनोबल बढ़ा है लेकिन अब वह अतीत की बात है।'' उन्होंने कहा,''हम यहां नई श्रृंखला खेलने के लिए आए हैं और हमारे खिलाड़ियों को विश्वास है कि हम अच्छी क्रिकेट खेल सकते हैं। हम परिणाम के बारे में नहीं सोच रहे हैं और केवल प्रक्रिया का अनुसरण करने की कोशिश कर रहे हैं।'' पाकिस्तान के खिलाफ शानदार प्रदर्शन के बावजूद बांग्लादेश के लिए भारत में खेलना आसान नहीं होगा लेकिन शंटो का मानना है की परिस्थितियों से खास अंतर पैदा नहीं होगा। उन्होंने कहा,'' भारत की टीम बहुत मजबूत है। हम जानते हैं कि वह तीनों विभाग बल्लेबाजी, गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण में मजबूत है लेकिन हम परिस्थितियों के बारे में नहीं सोच रहे हैं। हम केवल अपनी टीम के बारे में सोच रहे हैं।'' बांग्लादेश के युवा तेज गेंदबाज नाहिद राणा पर सभी की निगाहें टिकी रहेगी जिन्होंने पाकिस्तान में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया था। लेकिन शंटो ने कहा कि उनका ध्यान केवल एक खिलाड़ी के प्रदर्शन पर नहीं लगा है। उन्होंने कहा,''उसका प्रदर्शन उत्साह जनक है तथा पाकिस्तान के खिलाफ उसने जिस तरह से गेंदबाजी की वह वास्तव में प्रभावशाली थी लेकिन मैं अपना पूरा ध्यान एक खिलाड़ी पर नहीं लगाऊंगा। मेरा मानना है कि पाकिस्तान में सभी तेज गेंदबाजों ने अच्छा प्रदर्शन किया। उम्मीद है कि वे यहां भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे।'' शंटो ने कहा,''पिछले 10-15 वर्षों में

अधिकतर खिलाड़ी अनुभवी हो चुके हैं। अब वे अपनी भावनाओं पर काबू पाना सीख गए हैं। अब हम जीत या हार के बारे में नहीं बल्कि अपने खेल के बारे में सोचते हैं। हम प्रत्येक मैच में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की कोशिश करते हैं।

# कौन हैं हसन महमूद? जिन्होंने पहले टेस्ट में रोहित, गिल और कोहली को बनाया अपना शिकार

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** चेन्नई के चेपॉक स्टेडियम में भारत और बांग्लादेश के बीच पहला टेस्ट मैच खेला जा रहा है। जहां बांग्लादेश के कप्तान नजमुल हुसैन शंतो ने पहले गेंदबाजी का फैसला करते हुए भारत को पहले बल्लेबाजी का न्योता दिया। वहीं मुकाबले की शुरुआत में तेज गेंदबाज हसन महमूद ने भारत को 10 ओवर के अंतर 3 झटके दे दिए। हसन ने रहले कप्तान रोहित शर्मा, शुभमन गिल और विराट कोहली को पवेलियन भेज दिया। बांग्लादेश की टीम पाकिस्तान को उसी की जमीन पर 2-0 से हराकर भारत दौरे पर आई है। दूसरी ओर भारतीय टीम 6 महीने बाद टेस्ट सीरीज खेल रही है। ऐसे में हसन महमूद के 3 विकेट झटकने से बांग्लादेश का आत्मविश्वास और बढ़ा होगा। हसन की बात करें तो वह 140 किलोमीटर प्रतिघंटे से ज्यादा की रफ्तार से गेंद फेंकते हैं। उन्हें लक्ष्मीपुर एक्सप्रेस के नाम से भी जाना जाता है।

बता दें कि, हसन महमूद अपनी तेज गति के साथ गेंद को मूव कराकर से बल्लेबाजों को चकमा देते हैं। ये तेज गेंदबाज लोड-अप के दौरान बहुत ही कम छलांग लगाता है। वह 90 के दशक के कुछ कैरेबियाई तेज गेंदबाजों की तरह लंबे कदम रखते हैं।

रोहित शर्मा के विकेट की बात करें तो ऑफ स्टंप के आसपास से गुड़ लेंत की गेंद पर सीम होकर बार की तरफ गई। रोहित शर्मा के बल्ले का किनारा लेकर गेंद नजमुल हुसन शंतो के पास दूसरी स्लिप में गई। गिल सात गेंदों के बाद भी अपना खाता नहीं खोल पाए थे। उन्होंने एक फुल गेंद को लेग साइड में फ्लिप करने का प्रयास किया, जिसे लिटन दास ने लपका। जबकि कोहली भी रोहित की तरह ऑफ स्टंप की बाहर की गेंद को खेलने के प्रयास में आउट हुए। उन्होंने लिटन दास को कैच दिया।

# धरने पर बैठीं बिरसिंहपुर नपं अध्यक्ष

## समर्थकों के साथ एसपी ऑफिस में प्रदर्शन, कार्यालय में घुसकर हुई अभद्रता पर कार्रवाई न होने से नाराज

**मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र।** सतना जिले की बिरसिंहपुर नगर पंचायत की अध्यक्ष अपने समर्थकों और बड़ी संख्या में कस्बे के लोगों के साथ गुरुवार की सुबह सतना पहुंचीं और एसपी ऑफिस कैंपस में धरने पर बैठ गईं। नाराज भीड़ ने जमकर नारेबाजी की और दलितों के उत्पीड़न के मामले में कार्रवाई न करने का आरोप लगाया।

दलित समाज से आने वाली बिरसिंहपुर नगर पंचायत की नगर पंचायत अध्यक्ष राजकुमारी प्रजापति और उनके समर्थकों कस्बाई लोगों ने गुरुवार को सतना के एसपी ऑफिस में जमकर प्रदर्शन किया। वे कैंपस के अंदर एसपी चेम्बर के सामने ही धरने पर बैठ गए और नारेबाजी करने लगे।

उनका आरोप था कि बिरसिंहपुर नगर पंचायत कार्यालय में घुसकर अतिक्रमणकारी शिवम द्विवेदी ने नगर पंचायत अध्यक्ष के साथ अभद्रता की, जातिगत अपमान किया और धमकाते हुए हर माह 10 हजार रुपए देने के लिए कहा। लेकिन शिकायत के बावजूद टीआई सभापुर रविन्द्र द्विवेदी ने कोई एक्शन नहीं लिया। शिवम द्विवेदी ने नगर पंचायत की सीढ़ियों पर कब्जा कर रखा है, वह लोगों को ब्लैकमेल करता है, उसके खिलाफ पहले से भी कई मुकदमे दर्ज हैं। अब शासकीय कार्यालय में घुसकर दलित नगर पंचायत अध्यक्ष के साथ भी उसने दुर्व्यवहार किया लेकिन टीआई उसके खिलाफ कार्यवाही करने के बजाय उसे अपने साथ बैठाते-घुमाते हैं।

प्रदर्शनकारियों को समझाइश देने पहले सब इंस्पेक्टर संदीप चतुर्वेदी और फिर टीआई सिविल लाइन योगेंद्र सिंह पहुंचे लेकिन वे खामोश नहीं हुए और शिवम द्विवेदी के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने तथा टीआई रविन्द्र द्विवेदी को सभापुर से हटाने की मांग पर अड़े रहे। कुछ देर बाद एडिशनल एसपी शिवेश सिंह बघेल ने प्रदर्शनकारियों से बात की और उनका शिकायती पत्र लेकर आश्वस्त किया कि इस मामले की जांच करा कर कार्यवाही की जाएगी।

नगर पंचायत अध्यक्ष राजकुमारी प्रजापति ने बताया कि 2 सितंबर को वे अपने कार्यालय में मीटिंग ले रहीं थी तभी शिवम द्विवेदी वहां पहुंच गया और जातिगत अपमान करते हुए अभद्रता करने लगा। उसने इसके बाद भी कई बार रास्ते में बदतमीजी की। जब टीआई से शिकायत की तो वे उल्टा हमें ही नसीहत देने लगे। बहरहाल एएसपी ने इस मामले की जांच एसडीओपी चित्रकूट को सौंपी है।

## दो बाइक की भिड़ंत, 3 लोग घायल

### नांदी तौरा मोड़ पर हुआ हादसा, सड़क किनारे खड़े थे युवक

**मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट निप्र।** चित्रकूट के पहाड़ी थाना क्षेत्र में आज शाम एक दर्दनाक सड़क हादसा हुआ। जब नांदी तौरा मोड़ के पास दो बाइक की भिड़ंत हो गई। इस हादसे में तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। जब मैकू पुत्र चुनवाद निवासी पैकौरा अपने साथी उमेश पुत्र विजय के साथ बाइक से नांदी तौरा से पहाड़ी की ओर जा रहा था।

पहाड़ी मोड़ के पास उन्होंने अपनी बाइक किनारे खड़ी की थी। तभी सामने से तेज रफ्तार में आ रहे सूरज पुत्र बृजराज निवासी पहाड़ी बुजुर्ग की बाइक ने उनकी बाइक में टक्कर मार दी।

टक्कर इतनी भीषण थी कि दोनों बाइक पर सवार तीनों लोग सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। मौके पर मौजूद लोगों ने तुरंत 108 एम्बुलेंस को बुलाया। घायलों को सोनेपुर जिला अस्पताल भेजा।

उमेश की हालत नाजुक देखते हुए उसे सतना रेफर कर दिया गया। जबकि मैकू और सूरज का इलाज सोनेपुर जिला अस्पताल में चल रहा है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। हादसे के कारणों का पता लगाने की कोशिश कर रही है।

## 18 से 19 वर्ष के युवाओं के नाम निर्वाचक नामावली में जोडने के निर्देश

**मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र।** भारत निर्वाचन आयोग द्वारा लोक प्रतिनिधित्व 1950 (1950 का 43) की धारा 13 (ग) की उपधारा (1) द्वारा सतना एवं मैहर जिले के लिए अधिसूचित अतिरिक्त सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों को फोटो निर्वाचक नामावली का विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण एवं नियमित रूप से सतत कार्यवाही संपादित किये जाने एवं 18-19 वर्ष आयु वर्ग के युवा मतदाताओं का पंजीकरण वांछित स्तर तक किये जाने के लिए कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अनुराग वर्मा द्वारा जनपद पंचायत मझगवां, नागौद, सोहावल, उचेहरा, मैहर, अमरपाटन तथा रामपुर बघेलान के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों को विधानसभावार अतिरिक्त सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी अधिसूचित किया गया है।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा जारी आदेशानुसार सभी अतिरिक्त सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि अपने विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत आने वाले शैक्षणिक संस्थानों के गठित इलेक्टोरल लिटरेसी क्लब (ईएलसी) के साथ नियमित बैठक आयोजित कर उन्हें और पंजीकरण के लिए आवेदन प्रस्तुत करने की समय सीमा के बारे में जागरूक करेंगे। विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत प्रत्येक शैक्षणिक संस्थानों में पुनरीक्षण गतिविधियों के दौरान विशेष शिविर आयोजित कर मतदाता पंजीकरण प्रक्रिया के बारे में जागरूक करेंगे। एनवीएसपी, वीएचए एवं वीपी आदि आनलाईन पोर्टल के माध्यम से मतदाताओं के रूप में पंजीकरण करने के लिए अग्रिम दावों को दर्ज करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। आनलाइन फार्म जमा करने हेतु मतदाताओं को प्रोत्साहित करेंगे। जहां इंटरनेट की खराब पहुंच है या अन्य कारणों से आवेदन आनलाइन जमा करना संभव नहीं है वहां एईआरओ भौतिक रूप से प्राप्त फार्म-6 को बीएलओ के पास जमा करेंगे।

## कांग्रेस निकालेगी न्याय यात्रा, प्रभारी बोले- सरकारी संरक्षण में पल बढ़ रहा है भ्रष्टाचार

**मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र।** किसानों के हितों से जुड़े मुद्दों को लेकर कांग्रेस सतना में कल (20 सितंबर) को किसान न्याय यात्रा निकालेगी। किसान यात्रा में किसान ट्रैक्टर लेकर शामिल होंगे। किसान न्याय यात्रा के सतना जिला प्रभारी विनय सक्सेना ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि देश और प्रदेश की सरकार किसान हितैषी होने का सिर्फ ढोंग रच रही हैं। इस मौके पर विधायक सिद्धार्थ कुशवाहा, कांग्रेस जिलाध्यक्ष दिलीप मिश्रा एवं शहर अध्यक्ष एडवोकेट मकसूद अहमद भी मौजूद रहे।

कांग्रेस नेता विनय सक्सेना ने कहा कि कांग्रेस किसानों को उनका हक और न्याय दिलाने की लड़ाई लड़ने के लिए मैदान में है। किसानों के सम्बंध में बातें तो बड़ी - बड़ी होती हैं लेकिन हकीकत ये है कि किसान सबसे ज्यादा परेशान और दुर्दशा का शिकार है। किसानों पर महंगाई की जबरदस्त मार पड़ रही है।

खाद-बीज ,दवाएं और डीजल तो महंगा है ही बिजली और बिजली के बिलों के नाम पर भी किसानों के साथ ठगी-अन्याय किया जा रहा है। एक तरफ किसान सम्मान निधि देने का प्रचार किया जा रहा है और दूसरी तरफ उससे ज्यादा वसूली किसानों से कर ली जा रही है।

मध्य प्रदेश में भाजपा अपने चुनावी घोषणा पत्र में किए गए वादे भी पूरे नहीं कर रही है। किसानों को गेहूं और धान का उचित समर्थन मूल्य नहीं मिल रहा। जले हुए ट्रांसफॉर्मरों के नाम पर उनका आर्थिक शोषण किया जा रहा है। सक्सेना ने आरोप लगाया कि मध्य प्रदेश में सरकारी संरक्षण में भ्रष्टाचार का पालन - पोषण किया जा रहा है।

जिला प्रभारी सक्सेना ने केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान समेत अन्य भाजपा नेताओं-मंत्रियों पर निशाना साधा। उन्होंने कहा- सभी खुद को किसान पुत्र कहते हैं, किसानों की आमदनी दोगुनी करने का वादा-दावा करते हैं लेकिन ये सब सिर्फ बातें हैं। किसान की हालत न कोई देख रहा है और न उसमें सुधार हो रहा है। उन्होंने कहा कि इन्हीं तमाम मुद्दों को लेकर कांग्रेस 20 सितंबर को किसान न्याय यात्रा निकालेगी। उन्होंने दावा किया कि इसमें हजारों किसान शामिल होंगे।

## 7 साल का लड़का तालाब में डूबा, मौत

### परिजन बोले- भाई-बहन के साथ खेल रहा था, खेलते-खेलते तालाब में गिर पड़ा

**मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट निप्र।** चित्रकूट में गुरुवार को खेलते-खेलते 7 का बालक लवदीप कुमार की तालाब में डूबने से मौत हो गई। परिजनों ने बताया कि लवदीप अपने छोटे भाई-बहन, विधांशु और राजवीर के साथ घर से 200 मीटर दूर तालाब के पास खेल रहा था। खेलते-खेलते लवदीप अचानक तालाब में गिर गया और गहरे पानी में डूबने से उसकी जान चली गई।

जब उसके भाई-बहन ने यह दृश्य देखा तो तुरंत घर जाकर परिजनों को सूचना दी। परिजन तुरंत मौके पर पहुंचे, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। लवदीप को तालाब से निकाला गया तो उसकी मृत हो गई थी घटना की सूचना मिलते ही पुलिस भी मौके पर पहुंची और शव का पंचनामा भरने के बाद पोस्टमॉर्टम के लिए जिला मुख्यालय में भेज दिया। मामला पहाड़ी थाना क्षेत्र के देवल गांव का है।

**परिवार के लोग सदमे में:** परिजनों का कहना है कि यह घटना अप्रत्याशित है। परिवार इस हादसे से बेहद गहरे सदमे में है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और हर पहलू पर नजर बनाए हुए है।

## स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत मैहर जिले में सफाई अभियान चलाया गया

**मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र।** स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024 के अंतर्गत गुरुवार को विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी की उपस्थिति में एनजीओ, समाजसेवी, जनप्रतिनिधियों एवं नगर पालिका मैहर के सफाई कर्मचारियों द्वारा मां शारदा मंदिर रोड में नगर पालिका से लेकर बड़ा अखाड़ा गेट तक सफाई अभियान चलाया गया। कलेक्टर रानी बाटड ने नवरात्रि मेले की तैयारियों के दृष्टिगत अवैध अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही के निर्देश दिये। इस दौरान गंदगी फैलाने पर दुकानदारों, होटल संचालक के खिलाफ नगर पालिका द्वारा पांच सौ रुपए की चालानी कार्यवाही भी की गई। डस्टबिन भी देकर अपील की गई कि सभी नागरिक अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए अपने प्रतिष्ठानों के बाहर डस्टबिन जरूर रखे एवं अधिक से अधिक डस्टबिन का उपयोग करें। ताकि प्रतिष्ठानों के बाहर सड़क पर भी सफाई व्यवस्था बनी रहे। साथ ही होटल संचालक को फुटपाथ पर वाहन खड़ा ना करने की अपील की गई। इस मौके पर एसडीएम विकास सिंह, सीएमओ लालजी ताम्रकार, सीडीपीओ विद्याचरण तिवारी, संतोष सोनी एवं पार्षदगण मौजूद रहे।

## जिले में फसल अवशेष या नरवाई जलाने पर प्रतिबंध

### जिला मजिस्ट्रेट ने धारा 144 के तहत जारी किया आदेश

**मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र।** नरवाई से आग लगने की होने वाली घटनाओं, सार्वजनिक सम्पत्ति की सुरक्षा और पर्यावरणीय क्षति को रोकने के उद्देश्य से कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट अनुराग वर्मा ने दण्ड प्रक्रिया संहिता 1973 की धारा 144 के तहत आदेश जारी कर सतना जिले की चतुर्दिक राजस्व सीमा में फसल अवशेष, नरवाई को जलाने पर प्रतिबंध लगा दिया है। निर्देशों के उल्लंघन पर पर्यावरण क्षति पूर्ति की राशि 2500 से 15 हजार रूपये प्रति घटना वसूली जायेगी। साथ ही धारा 188 के तहत दण्डनीय भी होगा।

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट अनुराग वर्मा द्वारा जारी आदेश में फसलों की कटाई में उपयोग किये जाने वाले कंबाईन हार्वेस्टर के साथ स्ट्रा मैनेजमेन्ट सिस्टम के उपयोग को अनिवार्य किया गया है। जिले में धान/गेहूं की नरवाई से कृषक भूसा प्राप्त करना चाहते हैं, तो उनकी मांग को देखते हुये स्ट्रा मैनेजमेन्ट सिस्टम के स्थान पर स्ट्रा रीपर के उपयोग को अनिवार्य किया जा सकता है। कम्बाइन हार्वेस्टर के साथ एसएमएस अथवा स्ट्रा रीपर में से कोई भी एक मशीन साथ में रहना अनिवार्य रहेगा। जिले में चलने वाले कम्बाइन हार्वेस्टर के साथ स्ट्रा मैनेजमेन्ट सिस्टम/स्ट्रा रीपर अनिवार्य किया जाकर जिला परिवहन अधिकारी एवं सहायक कृषि अभियांत्रिकी जिला सतना निरंतर निगरानी रखेंगे, साथ ही बिना स्ट्रा रीपर के कम्बाइन हार्वेस्टर चलाये जाने पर वैधानिक कार्यवाही करेंगे। किसान बंधु फसल अवशेष/नरवाई न जलायें बल्कि इसका उपयोग आच्छादन/मल्चिंग एवं स्ट्रा रीपर से भूसा बनाकर पशुओं के भोजन या भूसे के विपणन से अतिरिक्त लाभ प्राप्त कर सकते हैं। पर्यावरण विभाग द्वारा नरवाई में आग लगाने की घटनाओं को प्रतिबंधित कर दण्ड अधिरोपित करने का प्रावधान किया गया है। नोटिफिकेशन से पर्यावरण सुरक्षा हेतु माननीय नेशनल ग्रीन ट्रिब्युनल के निर्देश क्रम में एक्ट 1981 के अंतर्गत प्रदेश में फसलों विशेषतः धान एवं गेहूं की फसल कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेतों में जलाये जाने हेतु प्रतिबंधित किया गया है। जिसे तत्काल प्रभाव से सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में लागू किये जाने के निर्देश हैं। निर्देशों का उल्लंघन किये जाने पर व्यक्ति/निकाय को नोटीफिकेशन प्रावधानानुसार पर्यावरण क्षतिपूर्ति राशि देय होगी। जिसमें दो एकड़ से कम भूमिधारक कृषकों द्वारा पर्यावरण क्षतिपूर्ति राशि 2500 रूपये, दो एकड़ से अधिक तथा पांच एकड़ से कम भूमिधारक कृषकों द्वारा पर्यावरण क्षतिपूर्ति राशि 5000 रूपये तथा पांच एकड़ से अधिक भूमिधारक कृषकों द्वारा पर्यावरण क्षतिपूर्ति राशि 15000 रूपये प्रति घटना देय होगी।

जिले में आदेश का पालन सुनिश्चित करने के लिये उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला सतना नोडल अधिकारी होंगे। आदेश में उल्लेखित किसी भी शर्त का उल्लंघन होने की स्थिति निर्मित होने पर संबंधित कृषि विस्तार अधिकारी क्षेत्र के पटवारी के साथ संयुक्त जांच कर प्रतिवेदन संबंधित तहसीलदार को भेजेंगें।

## युवती ने लगाया दुष्कर्म का आरोप

### आरोपियों ने दी परिवार को जान से मारने की धमकी, एसपी से पीड़िता ने की शिकायत

**मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट निप्र।** चित्रकूट जनपद के एक गांव में बलात्कार का चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जहां एक युवती ने गांव के ही युवक पर गंभीर आरोप लगाया है। पीड़िता ने दावा किया कि युवक ने दोस्ती का झांसा देकर कई बार उसका शोषण किया और जब उसने इसका विरोध किया, तो उसे और उसके परिवार को जान से मारने की धमकियां दीं।

**दोषी पर गंभीर आरोप:** पीड़िता के अनुसार, युवक ने उसे इस हद तक भयभीत कर दिया था कि उसे कुछ समय के लिए गांव छोड़कर बाहर जाना पड़ा। लेकिन, जब वह वापस आई, तो 9 सितंबर को युवक ने उसके परिवार के सदस्यों के साथ मारपीट की। इस घटनाक्रम से पीड़िता को मजबूर होकर फिर से अपने गांव लौटना पड़ा। पीड़िता का कहना है कि उसने स्थानीय थाने में कई बार शिकायत की, लेकिन आज तक कोई सुनवाई नहीं हुई।

**पीड़िता का बयान:** पीड़िता ने कहा, "मैंने कई बार पुलिस से गुहार लगाई, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। अब मैं न्याय की आस में यहां आई हूं, मुझे न्याय चाहिए और मेरे परिवार की सुरक्षा की गारंटी होनी चाहिए।"

**पुलिस की प्रतिक्रिया:** इस मामले पर पुलिस अधिकारियों ने उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया है। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि मामले की जांच जल्द ही शुरू की जाएगी और दोषी को सख्त सजा दी जाएगी। पुलिस का कहना है कि वे इस मामले को गंभीरता से ले रहे हैं और पीड़िता को सुरक्षा प्रदान करेंगे।

**आगे की कार्रवाई:** चित्रकूट में यह मामला अब तूल पकड़ता जा रहा है, और देखना होगा कि प्रशासन इस पर क्या कदम उठाता है। पीड़िता और उसके परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ-साथ आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

# चित्रकूट डीएम ने की निर्माण कार्यों की समीक्षा बैठक

## अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण निर्माण कार्यों में तेजी लाने के लिए मैन पॉवर बढ़ाने के दिए निर्देश

**मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट निप्र।** चित्रकूट डीएम शिवशरणप्पा जी एन की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में 50 लाख रुपए से अधिक लागत के निर्माण कार्यों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। इस दौरान डीएम ने अंतर्राज्यीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर दो और फोर लेन मार्गों पर गेट एवं प्रकाश व्यवस्था, राजकीय महाविद्यालय पाही, उद्यमिता प्रशिक्षण केंद्र, पर्यटन सुविधा केंद्र, जल जीवन मिशन, थाना भरतकूप और अन्य प्रमुख परियोजनाओं के कार्यों पर चर्चा हुई।

बैठक में डीएम ने कार्यदाई संस्थाओं के अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिन निर्माण कार्यों में प्रगति धीमी है। उनमें मैन पॉवर बढ़ाई जाए। कार्यों को गुणवत्ता के साथ समय सीमा के भीतर पूरा किया जाए। उन्होंने कहा कि जो निर्माण कार्य पूर्ण हो चुके हैं। उन्हें संबंधित विभागों को तत्काल हैंड ओवर कराया जाए।

डीएम ने भूमि संबंधी मामलों को प्राथमिकता से निपटाने के लिए तहसील वार सूची तैयार करने का निर्देश दिया। कहा कि सेतुओं के निर्माण कार्यों की गुणवत्ता की जांच के लिए एक समिति गठित की जाएगी। साथ ही एप्रोच रोड के लंबित कार्यों को जल्द से जल्द पूरा करने के लिए सेतु निगम के परियोजना प्रबंधक को निर्देशित किया गया।

रामघाट और परिक्रमा मार्ग पर चल रहे पर्यटन विकास कार्यों पर भी जिलाधिकारी ने विशेष जोर दिया। कहा कि अमावस्या मेले से पूर्व इन कार्यों को पूर्ण किया जाए। ताकि तीर्थ यात्रियों को कोई असुविधा न हो।

**निर्माण कार्यों में तेजी लाने के निर्देश:** इस दौरान बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अमृतपाल कौर, प्रभागीय वनाधिकारी नरेंद्र कुमार सिंह, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. वंदना श्रीवास्तव और अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। सभी ने निर्माण कार्यों में तेजी लाने और तय समय सीमा के भीतर उन्हें पूरा करने का संकल्प लिया।

सरकार की विकास योजनाओं को धरातल पर लाने की दिशा में जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जी एन के नेतृत्व में हो रही इस प्रकार की समीक्षा बैठकें निश्चित ही महत्वपूर्ण हैं। जनता को जल्द से जल्द इन परियोजनाओं का लाभ मिलने की उम्मीद है।

## जिले में अब तक 761.2 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज

**मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र।** जिले में इस वर्ष 1 जून से 19 सितंबर 2024 तक 761.2 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। अधीक्षक भू-अभिलेख सतना से प्राप्त जानकारी के अनुसार अब तक जिले की सतना (रघुराजनगर) तहसील में 1149.7 मि.मी., सोहावल (रघुराजनगर) में 501.6 मि.मी., बरौंधा (मझगवां) में 757.5 मिमी, बिरसिंहपुर में 886 मि.मी., रामपुर बाघेलान में 558 मि.मी., नागौद में 1026.1 मि.मी., जसो (नागौद) में 349 मि.मी. एवं उचेहरा में 861.5 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई है।

जिले की औसत सामान्य वर्षा 891.7 मि.मी. है। गत वर्ष इस अवधि में 582.2 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई थी।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।